हिन्दी दैनिक

राष्ट्रीय स्वाभिमान

RNI No. : MAHHIN/2008/24084. www.rashtriyaswabhimaan.com

● वर्ष : 18 ● अंक : 128 ● मुंबई, शुक्रवार, 20 नवम्बर 2026 ● पृष्ठ : 4 ● मूल्य 1 रुपए

गौमाता राष्ट्रमाता
स्वतःस्फूर्त गौ-प्रतिष्ठा आन्दोलन
Visit : www.1008.guru / Ph. : 7417417414

महाराष्ट्र में गुलाबी ठंड का बढ़ने लगा असर, विदर्भ में बारिश के आसार

अक्वाना चक्रवात का प्रभाव पूर्वी वदिर्भ तक सीमति, 20 से 22 नवंबर के बीच कुछ जलिों में बूंदाबांदी की संभावना; मुंबई-पुणे-नासकि समेत अधकिांश इलाकों में शुष्क रहेगा मौसम

मुंबई। महाराष्ट्र में मौसम ने अब धीरे-धीरे सर्दी की ओर करवट लेना शुरू कर दिया है। सुबह और देर रात ठंडी हवाओं का एहसास बढ़ने लगा है, वहीं दोपहर में तेज धूप के कारण गर्मी का असर अभी भी बरकरार है। मौसम के इस बदलते मिजाज के बीच राज्य के कई हिस्सों में गुलाबी ठंड ने दस्तक दे दी है। खासकर विदर्भ के जिलों में रात के तापमान में गिरावट दर्ज की जा रही है, जबकि दिन का तापमान अब भी 29 से 32 डिग्री सेल्सियस के आसपास बना हुआ है। इस बीच बंगाल की खाड़ी में सक्रिय चक्रवाती तूफान अक्वाना को लेकर मौसम विभाग ने महाराष्ट्र के लिए नया पूर्वानुमान जारी किया है। विभाग के अनुसार, इस चक्रवात का राज्य में व्यापक प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है। इसका असर मुख्य रूप से पूर्वी विदर्भ के कुछ जिलों तक सीमित रह सकता है, जहां 20 से 22 नवंबर के बीच कहीं-कहीं हल्की से मध्यम बारिश होने के आसार हैं। दूसरी ओर मुंबई, पुणे, नासिक, ठाणे, कोल्हापुर और मराठवाड़ा के अधिकांश इलाकों में मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। ऐसे में राज्य के ज्यादातर हिस्सों में फिलहाल बारिश की गतिविधियां नहीं बढ़ेंगी और सुबह-रात की ठंडक के साथ दोपहर की गर्मी का सिलसिला जारी रहेगा।

मौसम विभाग के क्षेत्रीय पूर्वानुमान के मुताबिक, चक्रवात अक्वाना के प्रभाव से विदर्भ के कुछ जिलों में बादलों की आवाजाही बढ़ सकती है। 20 नवंबर को गढ़चिरौली और यवतमाल जिलों में कुछ स्थानों पर हल्की बारिश होने की संभावना जताई गई है। इसके बाद 21 नवंबर को गढ़चिरौली, गोंदिया और चंद्रपुर में छिटपुट बारिश देखने को मिल सकती है। वहीं 22 नवंबर को गोंदिया जिले के कुछ हिस्सों में बूंदाबांदी के आसार बने हुए हैं। हालांकि, बारिश का यह दायरा सीमित रहने की संभावना है। विदर्भ के सभी जिलों में एक साथ बारिश होने या राज्यव्यापी मौसम खराब होने के संकेत नहीं मिले हैं। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार, बंगाल की खाड़ी में बने चक्रवाती सिस्टम का प्रभाव महाराष्ट्र के पूर्वी हिस्सों तक पहुंच सकता है, लेकिन पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों में इसका खास असर दिखाई देने की उम्मीद नहीं है। यही वजह है कि मौसम विभाग ने महाराष्ट्र के लिए फिलहाल किसी व्यापक खराब मौसम की चेतावनी जारी नहीं की है।



राज्य के तटीय और पश्चिमी हिस्सों में अगले कुछ दिनों तक मौसम का मिजाज लगभग सामान्य बना रहेगा। मुंबई, ठाणे, पालघर, रायगढ़, रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग में आसमान मुख्यतः साफ रहने और मौसम शुष्क बने रहने का अनुमान है। सुबह के समय हल्की धुंध या ठंडक महसूस हो सकती है, लेकिन दिन चढ़ने के साथ धूप तेज होने से तापमान में बढ़ोतरी होगी। पश्चिम महाराष्ट्र के पुणे, सातारा, सांगली, कोल्हापुर और सोलापुर जिलों में भी बारिश की कोई विशेष संभावना नहीं है। इसी तरह अहिल्यानगर, नासिक, धुले, जलगांव और नंदुरबार में भी मौसम शुष्क रहने के संकेत हैं। मराठवाड़ा के छत्रपति संभाजीनगर, जालना, बीड, लातूर, धाराशिव, नांदेड़, परभणी और हिंगोली जिलों में भी अगले कुछ दिनों तक बारिश की गतिविधियां सीमित रहने की संभावना है। इन इलाकों में सुबह और रात के समय हल्की ठंडक रहेगी, जबकि दोपहर में धूप के कारण मौसम अपेक्षाकृत गर्म बना रह सकता है।

विदर्भ में दिन और रात के तापमान के बीच लगातार अंतर देखने को मिल रहा है। 19 नवंबर को जारी तापमान रिपोर्ट के अनुसार, क्षेत्र के कई शहरों में अधिकतम तापमान 29 से 32 डिग्री सेल्सियस के बीच दर्ज किया गया, जबकि न्यूनतम तापमान कई स्थानों पर 11 से 16 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहा। यवतमाल में न्यूनतम तापमान 11.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो रिपोर्ट में विदर्भ के शहरों के बीच सबसे कम रहा। गोंदिया में रात का तापमान 12.8 डिग्री, नागपुर में 13.2 डिग्री और वर्धा में 12.8 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि रात के समय ठंड का प्रभाव बढ़ने लगा है, लेकिन दिन में सूर्य की तेज किरणों के कारण गर्मी का एहसास बना हुआ है। मौसम के इस उतार-चढ़ाव के चलते सुबह घर से निकलने वालों को हल्की गर्माहट वाले कपड़ों की जरूरत महसूस होने लगी है, जबकि दोपहर में सामान्य कपड़ों में भी गर्मी का अनुभव हो रहा है।

जिलेवार तापमान पर नजर डालें तो अकोला में अधिकतम तापमान 31.8 और न्यूनतम 16.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। अमरावती में अधिकतम तापमान 32.0 और न्यूनतम 15.9 डिग्री रहा। बुलढाणा में दिन का पारा 30.6 और रात का 15.7 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। चंद्रपुर में अधिकतम तापमान 32.0 और न्यूनतम 15.2 डिग्री, जबकि गढ़चिरौली में 31.2 और 15.4 डिग्री सेल्सियस रहा। गोंदिया में अधिकतम तापमान 28.8 और न्यूनतम 12.8 डिग्री दर्ज हुआ। नागपुर में दिन का तापमान 29.4 और रात का 13.2 डिग्री सेल्सियस रहा। वर्धा में अधिकतम 30.0 और न्यूनतम 12.8 डिग्री, वाशिम में 32.4 और 14.2 डिग्री तथा यवतमाल में अधिकतम 29.8 और न्यूनतम 11.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। तापमान के इन आंकड़ों से पता चलता है कि विदर्भ के कुछ जिलों में दिन का तापमान अभी भी 32 डिग्री के आसपास बना हुआ है, लेकिन रातें धीरे-धीरे ठंडी होती जा रही हैं। विशेष रूप से यवतमाल, गोंदिया, नागपुर और वर्धा में न्यूनतम तापमान में गिरावट के कारण सुबह के समय ठंड का एहसास अधिक हो रहा है।

20 नवंबर को भी राज्य के प्रमुख शहरों में मौसम का मिला-जुला मिजाज देखने को मिल सकता है। मुंबई में सुबह के समय हल्की धुंध रहने की संभावना है, हालांकि दिन चढ़ने के साथ आसमान साफ हो जाएगा। यहां न्यूनतम तापमान करीब 19 और अधिकतम 34 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। पुणे में मौसम मुख्यतः साफ रहेगा और तापमान 15 से 30 डिग्री के बीच रह सकता है। नागपुर में आंशिक बादल छाए रहने के साथ सुबह हल्की धुंध देखने को मिल सकती है। यहां न्यूनतम तापमान 14 और अधिकतम 31 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है। मुंबई में जहां दिन के समय गर्मी का असर अधिक रहेगा, वहीं पुणे और नागपुर में सुबह तथा रात का मौसम अपेक्षाकृत ठंडा महसूस हो सकता है। मौसम के इस बदलाव के कारण राज्य के अलग-अलग क्षेत्रों में तापमान का अंतर भी बना रहेगा। मौसम विभाग के अगले पांच दिनों के पूर्वानुमान के अनुसार, 20 से 24 नवंबर के बीच महाराष्ट्र में किसी बड़े मौसमी बदलाव के संकेत नहीं हैं। विदर्भ के पूर्वी जिलों में चक्रवात से प्रभावित बादलों के कारण कुछ स्थानों पर बारिश हो सकती है, लेकिन राज्य के अन्य हिस्सों में शुष्क मौसम जारी रहने की संभावना है। मुंबई और आसपास के तटीय क्षेत्रों में फिलहाल बारिश की कोई बड़ी गतिविधि नजर नहीं आ रही है। पुणे, नासिक और पश्चिम महाराष्ट्र के दूसरे जिलों में भी मौसम सामान्य रहने का अनुमान है। इस दौरान तापमान में बहुत अधिक उतार-चढ़ाव की संभावना नहीं जताई गई है। हालांकि, आसमान साफ रहने और रात के समय धरातल के तेजी से ठंडा होने के कारण न्यूनतम तापमान में स्थानीय स्तर पर गिरावट दर्ज हो सकती है। अक्वाना चक्रवात का मुख्य प्रभाव आंध्र प्रदेश और ओडिशा के तटीय क्षेत्रों में रहने का अनुमान है। महाराष्ट्र के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में इसका असर सीमित बताया गया है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के 19 नवंबर के राष्ट्रीय बुलेटिन में विदर्भ के कुछ हिस्सों में 20 और 21 नवंबर को छिटपुट बारिश की संभावना जताई गई है। जिला स्तर के पूर्वानुमान में भी गढ़चिरौली, यवतमाल, गोंदिया और चंद्रपुर जैसे क्षेत्रों में अलग-अलग दिनों में बारिश के संकेत दिए गए हैं। हालांकि, महाराष्ट्र के लिए किसी व्यापक मौसम चेतावनी की घोषणा नहीं की गई है। इसका मतलब है कि राज्य के अधिकांश हिस्सों में जनजीवन, यातायात और सामान्य गतिविधियों पर चक्रवात का कोई बड़ा प्रभाव पड़ने की संभावना फिलहाल कम है।

कुल मिलाकर महाराष्ट्र में सर्दी की शुरुआत का एहसास अब धीरे-धीरे बढ़ने लगा है। विदर्भ में रात का तापमान गिरने से गुलाबी ठंड का असर स्पष्ट दिखाई दे रहा है, जबकि मुंबई और पश्चिम महाराष्ट्र में सुबह-रात की हल्की ठंड के साथ दोपहर की गर्मी बनी हुई है। अगले कुछ दिनों में राज्य के मौसम की सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि पूर्वी विदर्भ में होने वाली संभावित हल्की बारिश रहेगी। बाकी महाराष्ट्र में फिलहाल आसमान साफ रहने और मौसम शुष्क बने रहने का अनुमान है।

गधे के आगे गीता पढ़ने जैसी है सरकार की हालत; वर्सोवा में पेड़ों की कटाई पर रोहिणी खडसे का हमला

नाना-नानी पार्क में कोस्टल रोड परियोजना के लिए पुराने पेड़ों की कटाई पर जताई नाराजगी, 3,200 आपत्तियों की अनदेखी का लगाया आरोप

जलगांव/मुंबई। मुंबई के वर्सोवा स्थित नाना-नानी पार्क में वर्सोवा-भायंदर कोस्टल रोड परियोजना के लिए हो रही पेड़ों की कटाई को लेकर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) की महिला प्रदेशाध्यक्ष रोहिणी खडसे ने राज्य सरकार और मुंबई महानगरपालिका पर निशाना साधा है। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि सरकार में बैठे कुछ लोगों की स्थिति ऐसी हो गई है कि 'गधे के आगे गीता पढ़ने जैसी बात है, लेकिन गधा कह रहा है कि रात का हंगामा ही अच्छा था।'

रोहिणी खडसे ने आरोप लगाया कि मुंबई महानगरपालिका नाना-नानी पार्क में कई पुराने पेड़ों की कटाई कर रही है। उन्होंने कहा कि रायगढ़ जिले के कर्जत तालुका के भीमाशंकर में पेड़ों की कटाई को लेकर राज्य सरकार की काफी किरकिरी हुई थी, लेकिन अब मुंबई महानगरपालिका भी जनता की नाराजगी मोल लेने की तैयारी में है।



उन्होंने अपनी पोस्ट में कहा कि एक तरफ वैश्विक जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरण संबंधी संकट बढ़ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर मुंबई की हवा का गुणवत्ता सूचकांक (AQI) भी खतरनाक स्तर पर पहुंच रहा है। ऐसे हालात में पेड़ों की कटाई का फैसला समझ से परे है। खडसे ने दावा किया कि इस परियोजना के संबंध में नागरिकों की 3,200 आपत्तियों को नजरअंदाज कर रात के अंधेरे में पेड़ों की कटाई की जा रही है।

उन्होंने सवाल उठाया कि आखिर इतनी बड़ी संख्या में पेड़ों की कटाई किसके हित में की जा रही है? विकास के नाम पर पर्यावरण का विनाश स्वीकार नहीं किया जा सकता। रोहिणी खडसे ने मांग की कि वर्सोवा के नाना-नानी पार्क में जारी पेड़ों की कटाई तत्काल रोकी जाए और पर्यावरण संरक्षण तथा नागरिकों की आपत्तियों को गंभीरता से लिया जाए।

गोकुल दूध के दामों में बढ़ोतरी, 21 नवंबर से नई दरें लागू



कोल्हापुर/मुंबई। महाराष्ट्र के प्रमुख दुग्ध ब्रांड गोकुल दूध ने उपभोक्ताओं को महंगाई का एक और झटका दिया है। गोकुल दूध संघ के नए अध्यक्ष राजेश पाटील के नेतृत्व में गठित संचालक मंडल ने दूध की खरीद और बिक्री दोनों की कीमतों में बढ़ोतरी करने का निर्णय लिया है। नई दरें 21 नवंबर 2026 से लागू होंगी। इस फैसले के बाद मुंबई, पुणे, कोल्हापुर सहित गोकुल दूध की आपूर्ति वाले विभिन्न शहरों में उपभोक्ताओं को अब दूध खरीदने के लिए पहले से अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी। संघ ने भैंस के दूध की बिक्री कीमत में छह रुपये प्रति लीटर और गाय के दूध की कीमत में दो रुपये प्रति लीटर की वृद्धि की है। वहीं दूध उत्पादकों को भी राहत देने के उद्देश्य से खरीद दरों में बढ़ोतरी की गई है। भैंस के दूध का खरीद भाव तीन रुपये और गाय के दूध का खरीद भाव दो रुपये प्रति लीटर बढ़ाया गया है। संघ के इस फैसले को नए प्रबंधन की ओर से आर्थिक स्थिति सुधारने और दूध उत्पादकों को बेहतर भुगतान देने की दिशा में उठाए गए कदम के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि, कीमतों में बढ़ोतरी का सीधा असर आम परिवारों के मासिक घरेलू बजट पर पड़ना तय है। नई दरों के लागू होने के बाद मुंबई और पुणे में भैंस का दूध खरीदने वाले उपभोक्ताओं को सबसे अधिक अतिरिक्त बोझ उठाना पड़ेगा। इन दोनों शहरों में भैंस के दूध की कीमत अब तक 78 रुपये प्रति लीटर थी, जिसे बढ़ाकर 84 रुपये प्रति लीटर कर दिया गया है। यानी ग्राहकों को प्रत्येक लीटर पर छह रुपये अधिक चुकाने होंगे। इसी तरह कोल्हापुर में भैंस के दूध की कीमत 72 रुपये से बढ़कर 78 रुपये प्रति लीटर हो जाएगी। गाय के दूध की कीमत में भी दो रुपये प्रति लीटर की वृद्धि की गई है। हालांकि, गाय के दूध की सभी शहरों में संशोधित बिक्री दरों का पूरा विवरण उपलब्ध नहीं कराया गया है। नई कीमतें लागू होने के बाद गोकुल दूध के नियमित ग्राहकों को अपनी दैनिक खरीद के हिसाब से अतिरिक्त खर्च करना पड़ेगा। खासकर उन परिवारों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ेगा, जिनके घरों में रोजाना अधिक मात्रा में दूध की खपत होती है। बच्चों, बुजुर्गों और अन्य सदस्यों की जरूरत के कारण दूध की नियमित खरीद करने वाले परिवारों के लिए यह बढ़ोतरी मासिक बजट को प्रभावित कर सकती है। दूध की बिक्री कीमत बढ़ाने के साथ ही संघ ने दूध उत्पादकों के भुगतान में भी वृद्धि की है। भैंस के दूध के खरीद भाव में तीन रुपये प्रति लीटर और गाय के दूध के खरीद भाव में दो रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी का निर्णय लिया गया है। डेयरी क्षेत्र में दूध उत्पादकों की लागत लगातार बढ़ रही है। पशुओं के लिए हरा चारा, सूखा चारा, पशु आहार, दवाइयों और देखभाल पर होने वाला खर्च पहले की तुलना में अधिक हो गया है। इसके अलावा पशुपालन से जुड़े श्रम और परिवहन खर्च में भी वृद्धि हुई है। ऐसे में दूध उत्पादकों को मिलने वाले भुगतान में बढ़ोतरी से उन्हें कुछ राहत मिलने की उम्मीद है। गोकुल दूध संघ का कहना है कि दूध उत्पादन की लागत और बाजार की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कीमतों में संशोधन जरूरी हो गया था। दूध की खरीद दर बढ़ाने का उद्देश्य उत्पादकों को आर्थिक रूप से प्रोत्साहित करना और दुग्ध आपूर्ति की निरंतरता बनाए रखना भी है। गोकुल दूध संघ की आर्थिक स्थिति भी इस फैसले के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण मानी जा रही है। नए अध्यक्ष राजेश पाटील ने 13 नवंबर को पदभार संभालने के बाद ही दूध की कीमतों में संभावित बढ़ोतरी के संकेत दिए थे। उस समय उन्होंने बताया था कि प्रशासक के कार्यकाल के दौरान संघ को लगभग 24 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इसके बाद 19 नवंबर को सामने आई रिपोर्ट में संघ की वित्तीय कमी करीब 70 करोड़ रुपये बताई गई। इन अलग-अलग आंकड़ों के बीच संघ के सामने आर्थिक स्थिति को मजबूत करने और बढ़ते खर्चों का प्रबंधन करने की चुनौती बनी हुई है।

कांग्रेस की विचारधारा को जमीनी स्तर तक पहुंचाएं, जनता के मुद्दों पर मजबूती से आवाज उठाएं : हर्षवर्धन सपकाल

मराठवाड़ा में संगठनात्मक समीक्षा बैठक, SIR प्रक्रिया को लेकर BLA प्रतिनिधियों ने बताईं समस्याएं

मुंबई/बीड। महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने पार्टी पदाधिकारियों से कांग्रेस की विचारधारा, नीतियों और उद्देश्यों को जमीनी स्तर तक पहुंचाने तथा जनता से जुड़े मुद्दों पर अधिक प्रभावी ढंग से आवाज उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि संगठन को मजबूत बनाने के लिए बूथ से लेकर जिला स्तर तक सभी पदाधिकारियों को एकजुटता और आपसी समन्वय के साथ काम करना होगा।

मराठवाड़ा संभाग के लोकसभा क्षेत्र प्रभारियों, जिला प्रभारियों, जिलाध्यक्षों और विधानसभा क्षेत्र प्रभारियों की संगठनात्मक समीक्षा बैठक बीड में आयोजित की गई। बैठक में पार्टी प्रभारी डॉ. सिरिवेल्ला प्रसाद और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान मराठवाड़ा में पार्टी संगठन की वर्तमान स्थिति, संगठनात्मक गतिविधियों और आगामी विस्तार की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई।



बैठक में सहप्रभारी रेहाना चिस्ती, सांसद डॉ. कल्याण काले, सांसद शिवाजी कालगे, प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एडवोकेट गणेश पाटील, प्रदेश महासचिव गुरबिंदर बच्छर, आदित्य पाटील और बीड जिलाध्यक्ष राहुल सोनवणे सहित संभाग के प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित थे।

SIR प्रक्रिया को लेकर BLA प्रतिनिधियों से संवाद

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) की प्रक्रिया में आ रही समस्याओं को समझने के लिए पार्टी प्रभारी डॉ. सिरिवेल्ला प्रसाद और हर्षवर्धन सपकाल ने जिरपी, तहसील अंबड, जिला जालना में कांग्रेस के BLA-2 प्रतिनिधियों से संवाद किया। इस दौरान प्रतिनिधियों ने आरोप लगाया कि सरकारी बूथ लेवल अधिकारियों (BLO) की ओर से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है। उनका कहना था कि सत्ताधारी दल के प्रतिनिधियों और सरकारी BLO के बीच कथित मिलीभगत के कारण कई पात्र मतदाताओं को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बार-बार संपर्क करने के बावजूद आवश्यक जानकारी और सहयोग उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है।

हर्षवर्धन सपकाल ने कहा कि SIR प्रक्रिया के नाम पर किसी भी पात्र मतदाता का नाम मतदाता सूची से नहीं हटाया जाना चाहिए। चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को समान सहयोग मिलना जरूरी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के BLA प्रतिनिधि मतदाताओं के अधिकारों की रक्षा के लिए सतर्कता से काम कर रहे हैं और उनकी शिकायतों का गंभीरता से संज्ञान लेकर लगातार फॉलोअप किया जाएगा।

चुनाव आयोग से मतदान के आंकड़े सार्वजनिक करने की मांग

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सपकाल ने चुनावी आंकड़ों की पारदर्शिता पर भी सवाल उठाए। उन्होंने दावा किया कि देश के 200 विधानसभा क्षेत्रों में शाम 5 बजे के बाद हुए मतदान का डेटा चुनाव आयोग के पास उपलब्ध नहीं है, जिनमें महाराष्ट्र के 114 विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। उन्होंने चुनाव आयोग से मतदान का पूरा आंकड़ा सार्वजनिक करने और इस मामले की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की।

सपकाल ने कहा कि चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही लोकतंत्र की विश्वसनीयता के लिए जरूरी है। जनता के मतदान से जुड़े आंकड़ों को सार्वजनिक किया जाना चाहिए, ताकि चुनाव प्रक्रिया पर लोगों का विश्वास बना रहे।

इस अवसर पर सांसद डॉ. कल्याण काले, जिलाध्यक्ष कल्याण दळे, शहराध्यक्ष विशाल धानुरे, जिला प्रभारी श्याम उमाळकर, राजेंद्र राख, राजाभाऊ देशमुख, प्रभाकर पवार, तालुकाध्यक्ष श्रीरंग कामठे और कल्याण तारडे सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे।

महाराष्ट्र की 310 तहसीलों में सूखे का संकट, निर्माण कार्यों पर लगी रोक

मुंबई। महाराष्ट्र में सूखे की गंभीर होती स्थिति और पेयजल संकट को देखते हुए राज्य सरकार ने राहत एवं बचाव के उपाय तेज कर दिए हैं। प्रदेश की 310 तहसीलों में सूखे की स्थिति को ध्यान में रखते हुए सरकार ने गैरजरूरी नए निर्माण कार्यों पर अस्थायी रोक लगाने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही जिला वार्षिक योजना की निधि का इस्तेमाल जलसंकट से निपटने और नागरिकों को पर्याप्त पानी उपलब्ध कराने वाले कार्यों पर प्राथमिकता से करने के निर्देश जारी किए गए हैं। सरकार का जोर फिलहाल नए निर्माण कार्यों के बजाय पेयजल आपूर्ति, जलस्रोतों के विकास और अधूरी जलापूर्ति योजनाओं को पूरा करने पर है। सूखे की मार झेल रहे किसानों, ग्रामीण परिवारों और विद्यार्थियों को राहत देने के लिए कई अन्य फैसले भी किए गए हैं। इनमें सूखाग्रस्त क्षेत्रों में पानी पहुंचाने के लिए आर्थिक सहायता बढ़ाने से लेकर चिकित्सा शिक्षा के विद्यार्थियों की परीक्षा फीस माफ करने तक के प्रावधान शामिल हैं। राज्य सरकार के इस फैसले से स्वास्थ्य विज्ञान के विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत 1,06,308 विद्यार्थियों को लाभ मिलने की उम्मीद है। उनकी करीब 39.92 करोड़ रुपये की परीक्षा फीस माफ की जाएगी। खास बात यह है कि इस छूट का लाभ लेने के लिए आठ लाख रुपये की वार्षिक पारिवारिक आय की शर्त भी लागू नहीं होगी। राज्य के नियोजन विभाग ने गुरुवार को इस संबंध में शासनादेश जारी कर सभी जिलाधिकारियों और जिला योजना समितियों को नए निर्माण कार्यों की समीक्षा करने के निर्देश दिए हैं। इसके तहत सूखाग्रस्त घोषित तहसीलों में जिला वार्षिक योजना के अंतर्गत प्रस्तावित ऐसे निर्माण कार्यों की प्राथमिकता पर दोबारा विचार किया जाएगा, जिन्हें फिलहाल टाला जा सकता है। सरकार का उद्देश्य उपलब्ध सरकारी धन का उपयोग तत्काल जरूरतों के अनुसार करना है, ताकि सूखे से प्रभावित क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। हालांकि, इस निर्णय के तहत सभी निर्माण कार्यों को बंद नहीं किया गया है। पानी की उपलब्धता बढ़ाने, नए जलस्रोत विकसित करने, जलापूर्ति व्यवस्था मजबूत करने और स्वास्थ्य एवं सुरक्षा से जुड़े जरूरी कार्यों को रोक से बाहर रखा गया है। आपातकालीन परिस्थितियों में किए जाने वाले कार्य भी जारी रह सकेंगे। जिलाधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे स्थानीय जरूरतों और सूखे की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए योजनाओं की समीक्षा करें तथा उपलब्ध निधि का इस्तेमाल प्राथमिकता के आधार पर करें। इससे उन क्षेत्रों में राहत कार्यों को गति देने में मदद मिलने की उम्मीद है, जहां गर्मी और कम वर्षा के कारण पेयजल की समस्या गंभीर हो रही है। महाराष्ट्र में सूखाग्रस्त तहसीलों की संख्या बढ़ने के पीछे नए क्षेत्रों में भी सूखे की स्थिति सामने आना प्रमुख कारण है। हाल ही में कोल्हापुर जिले के हातकणंगले और गडहिंग्लज, पालघर जिले के वाडा और विक्रमगढ़, रत्नागिरी जिले के चिपलूण तथा नासिक जिले के दिंडोरी में भी सूखा घोषित किया गया है।

संपादकीय

मठाधीशों को अपराध से अभयदान नहीं

भारतीय संस्कृति में 'संत' या 'गुरु' शब्द त्याग, वैराग्य, करुणा और आत्मिक शुचिता का प्रतीक रहा है। विगत कुछ दशकों से इस पावन आंगन में एक ऐसा वर्ग पनप रहा है, जिसने वैराग्य के स्थान पर वैभव और साधना के स्थान पर साम्राज्यवाद को अपना लिया है। हाल ही में उज्जैन के एक स्वामी महाराज पर एक महिला द्वारा गंभीर आरोपों में प्राथमिकी दर्ज होने तथा केंद्रीय संस्था द्वारा उन्हें महामंडलेश्वर पद से निष्कासित किए जाने की घटना ने समाज को विचलित किया।आज के तथाकथित बाबाओं द्वारा खड़ा किया गया विशाल तामझाम, आलीशान आश्रम, लग्जरी गाड़ियां और निजी सुरक्षा गार्ड्स का लवाजमा भारतीय अध्यात्म के मूल सिद्धांत 'अपरिग्रह' का सीधा उल्लंघन है। आखिर शिक्षित लोग भी इन मठाधीशों व स्वयंभू बाबाओं के मायाजाल में कैसे फंस जाते हैं? मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखें तो 'भक्तों को मूर्ख बनाने की कला' मुख्य रूप से मानवीय भय, असुरक्षा, दुःख और चमत्कार की लालसा पर टिकी होती है।ये स्वयंभू गुरु स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि घोषित कर पीआर तंत्र के माध्यम से एक आभासी आभामंडल तैयार करते हैं। फिर संकटग्रस्त व्यक्तियों का भावनात्मक व आर्थिक शोषण करते हैं। सच्ची भक्ति व्यक्ति को निर्भय और विवेकशील बनाती है, जबकि पाखंडी गुरुओं द्वारा परोसा गया अंधविश्वास व्यक्ति की तर्कशक्ति को समाप्त कर उसे मानसिक गुलाम बना देता है। भारतीय संविधान और कानून में धर्म की आड़ में अपराध की कोई छूट नहीं है। अनुच्छेद 25 धार्मिक स्वतंत्रता देता है, लेकिन यह लोक व्यवस्था और सदाचार के अधीन है। किसी धार्मिक गुरु द्वारा यौन उत्पीड़न करना न केवल इस सीमा का उल्लंघन है, बल्कि पीड़िता के अनुच्छेद 21 (गरिमापूर्ण जीवन) के अधिकार का भी हनन है। इसके अतिरिक्त, भारतीय न्याय संहिता की धारा 64(2) के तहत आश्रम या ट्रस्ट के पद का दुरुपयोग कर दुष्कर्म करना 'गुरुतर अपराध' है, जिसमें न्यूनतम 10 वर्ष से आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान है। भारतीय न्यायपालिका ने भी स्पष्ट किया है कि आध्यात्मिक पद अपराधियों के लिए ढाल नहीं बन सकता। आसाराम बापू और गुरमीत राम रहीम मामलों में अदालतों ने रेखांकित किया कि जब समाज का एक बड़ा वर्ग किसी व्यक्ति को 'गुरु' मानकर अटूट विश्वास करता है तो उसका नैतिक और कानूनी दायित्व और बढ़ जाता है; ऐसे पद का दुरुपयोग कर समाज के साथ विश्वासघात है। इसके अतिरिक्त, शिरूर मठ केस (1954) में सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि धर्म का 'अनिवार्य हिस्सा' क्या है, इसका निर्धारण न्यायालय करेगा, और कोई भी अनैतिक या आपराधिक कृत्य धर्म का हिस्सा नहीं हो सकता। विश्व के अन्य लोकतांत्रिक देशों में भी धार्मिक गुरुओं और पंथों द्वारा किए जाने वाले अपराधों के विरुद्ध कठोर कानून हैं। भारत के संदर्भ में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या तथाकथित संतों पर लगाम कसने के लिए किसी विशेष कानून की आवश्यकता है? वर्तमान में महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों में 'अंधश्रद्धा निर्मूलन कानून' लागू हैं, परंतु राष्ट्रीय स्तर पर आश्रमों के नियमन हेतु कोई समग्र केंद्रीय कानून नहीं है। भारतीय न्याय संहिता में दुष्कर्म के खिलाफ पर्याप्त प्रावधान हैं, किंतु 'मानसिक शोषण' और धार्मिक ट्रस्टों की बेनामी संपत्ति के ऑडिट के लिए एक विशेष 'धार्मिक संस्था एवं आश्रम विनियमन अधिनियम' बनाने की नितांत आवश्यकता है। ऐसा कानून फर्जी बाबाओं पर अंकुश लगाएगा। एक महत्वपूर्ण पहलू 'आध्यात्मिक कदाचार' और 'संस्थागत उत्तरदायित्व' का भी है। जिस प्रकार लापरवाही पर डॉक्टर का लाइसेंस रद्द होता है, उसी तरह कोई महत्वपूर्ण उपाधि देने से पहले व्यक्ति की पृष्ठभूमि जांचना अखाड़ों का दायित्व होना चाहिए। यदि पद देने से पहले ही कठोर चरित्र सत्यापन किया जाए, तो अपराधी प्रवृत्ति के लोग धर्म के शीर्ष पदों तक पहुंच ही नहीं पाएंगे। सर्वप्रथम, सभी आश्रमों व ट्रस्टों का अनिवार्य पंजीकरण और प्रमाणित ऑडिटरों से वार्षिक ऑडिट कराया जाए। द्वितीय, महिलाओं व बच्चों की सुरक्षा हेतु आंतरिक शिकायत समिति का गठन अनिवार्य हो। तृतीय, नियामक संस्था द्वारा 'राष्ट्रीय आध्यात्मिक आचार संहिता' बनाकर निजी विलासिता और राजनीतिक हस्तक्षेप पर रोक लगाए।

तो क्या ट्रंप के 'कूटनीतिक मायाजाल' में फंस जाएंगे पुतिन और जिनपिंग? आखिर अपने रणनीतिक सहयोगियों को क्या देंगे दिलासा?

> ऐसे में अमेरिका, रूस और चीन के बीच उभरता त्रिकोणीय कूटनीतिक समीकरण केवल तीन महाशक्तियों के नेताओं की मुलाकात का विषय नहीं है, बल्कि इसके पीछे वैश्विक शक्ति संतुलन, रणनीतिक साझेदारियों, आर्थिक हितों और छोटे-बड़े देशों के भरोसे की बड़ी लड़ाई भी दिखाई देती है।

दुनिया को अपने शब्द जाल में फंसाकर, साम-दाम-दंड-भेद की रणनीति अपनाकर ₹मेक अमेरिका ग्रेट अगेन₹ का स्वप्न संजोए राष्ट्रपति ट्रंप अपने इरादों में कितना कामयाब होंगे, यह तो गुजश्ता वक्त ही बताएगा। लेकिन भारत की कूटनीतिक स्वायत्ता और ग्लोबल साउथ की अगुवाई वाली रणनीति से अमेरिका इतना परेशान हो गया कि अब उन्हीं देशों के साथ टेबल की मेज पर बैठा हुआ है, जिनके खिलाफ वह अनवरत षड्यंत्र रचते आया है।ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर रूस और चीन की क्या अंतर्राष्ट्रीय मजबूरी है जो वे वैश्विक रूप से प्रभुत्वहीन हो चुके अमेरिका के साथ मेज साझा कर रहे हैं! कहीं ऐसा तो नहीं कि भारत की कूटनीतिक व रणनीतिक स्वायत्तता से ये दोनों भी भीतर ही भीतर विचलित हो रहे हैं। मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय दुनियादारी में भारत, अपने समकक्ष देशों यथा-फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका के अलावा यूरोपीय संघ, मध्यपूर्व के देशों और आशियान देशों के साथ जो समझदारी भरे रिश्ते विकसित कर रहा है, इससे भी अमेरिका, रूस और चीन का चिंतित होना स्वाभाविक है।

ऐसे में अमेरिका, रूस और चीन के बीच उभरता त्रिकोणीय कूटनीतिक समीकरण केवल तीन महाशक्तियों के नेताओं की मुलाकात का विषय नहीं है, बल्कि इसके पीछे वैश्विक शक्ति संतुलन, रणनीतिक साझेदारियों, आर्थिक हितों और छोटे-बड़े देशों के भरोसे की बड़ी लड़ाई भी दिखाई देती है। ये देश नहीं चाहते कि इनके समानांतर कोई नया देश खड़ा हो और वह उनकी आवाज बने जिनका शोषण करते रहना इनकी नीतिगत फितरत है।



यही वजह है कि इस पूरे घटनाक्रम को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण सवाल है कि क्या ट्रंप, रूस और चीन को आपसी मतभेदों, क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं और अपने-अपने सहयोगियों के हितों के बीच इस तरह उलझा सकते हैं कि दोनों देशों की विश्वसनीयता प्रभावित होने लगे?

भले ही यह एक विचारणीय भू-राजनीतिक परिकल्पना है। हालांकि, इसे किसी प्रमाणित अमेरिकी डीप स्टेट योजना का नाम देना अभी उचित नहीं होगा, जबतक कि पूरा खेल स्पष्ट न हो जाए। वैसे भी ट्रंप कब क्या कहेंगे, कब पलटीमार देंगे, भरोसे के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। इन सबके पीछे उनका स्वार्थ कितना साधता है, सबकुछ इसी बात पर निर्भर करता है।

पहला सवाल यह है कि ट्रंप की रणनीति का संभावित केंद्रीय सूत्र क्या है? तो जवाब होगा कि ट्रंप की विदेश नीति में व्यक्तिगत कूटनीति, आर्थिक सौदेबाजी और शक्ति प्रदर्शन को काफी महत्व मिलता है। रूस और चीन के साथ बातचीत के संभावित उद्देश्यों को निम्नलिखित तीन स्तरों पर समझा जा सकता है:- एक, रूस को साधनाः यूक्रेन युद्ध में समझौते के लिए पुतिन पर कूटनीतिक प्रभाव बनाना और मॉस्को के साथ अमेरिका के संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करना, ताकि उसे लाभ होता रहे। दो, चीन को साधनाः व्यापार, तकनीक, दुर्लभ खनिजों और ताइवान जैसे मुद्दों पर बीजिंग से रियायतें हासिल करना, ताकि उनके उद्योगों के लिए रियायती कच्चा माल मिलता रहे। तीन, दोनों को एक मंच पर लानाः परमाणु हथियार नियंत्रण, ईरान और वैश्विक सुरक्षा के मुद्दों पर ऐसी बातचीत करना जिसमें अमेरिका अपनी भूमिका केंद्रीय बनाए रखना चाहे। हालांकि, इन सबमें एक महत्वपूर्ण विरोधाभास भी है। वह यह कि चीन और रूस की निकटता अमेरिका की उस पुरानी रणनीति को कमजोर करती है जिसमें दोनों महाशक्तियों के बीच मतभेदों का लाभ उठाकर वाशिंगटन अपनी स्थिति मजबूत करता था।

दूसरा सवाल है कि रूस और चीन के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने सहयोगियों का भरोसा बनाए रखना होगा। खासकर भारत और ईरान आदि जैसे उभरते देशों का। यही इस पूरे घटनाक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, जो इसप्रकार है:- एक, रूस की विश्वसनीयताः यदि पुतिन अमेरिका के साथ किसी बड़े समझौते में यूक्रेन, ईरान या अन्य रणनीतिक साझेदारों के हितों को नजरअंदाज करते दिखाई देते हैं, तो मॉस्को के सहयोगियों के बीच उसकी प्रतिबद्धताओं को लेकर सवाल उठ सकते हैं। दो, चीन की विश्वसनीयताः यदि शी जिनपिंग अमेरिका के साथ किसी समझौते में ताइवान, ईरान या अपने दूसरे रणनीतिक साझेदारों के मुद्दों पर ऐसी रियायत देते हैं जिसे सहयोगी अपने हितों के विरुद्ध समझें, तो चीन की साझेदारी की विश्वसनीयता पर बहस हो सकती है। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी है। रूस और चीन अपने सहयोगियों के साथ संबंधों को केवल अमेरिका के साथ बातचीत के आधार पर तय नहीं करते। उनके आर्थिक, सैन्य, राजनीतिक और क्षेत्रीय हित भी इसमें महत्वपूर्ण हैं।

तीसरा सवाल यह है कि क्या ट्रंप दोनों महाशक्तियों को एक-दूसरे के विरुद्ध इस्तेमाल कर सकते हैं? तो यहां 1970 के दशक की अमेरिकी त्रिकोणीय कूटनीति याद आती है। तब अमेरिका ने सोवियत संघ और चीन के बीच मतभेदों का लाभ उठाकर बीजिंग के साथ संबंध बेहतर किए थे। इससे वाशिंगटन को मॉस्को के मुकाबले कूटनीतिक लाभ मिला था। लेकिन 2026 की परिस्थितियां बिल्कुल अलग हैं। वह यह कि रूस और चीन के बीच रणनीतिक साझेदारी पहले से अधिक मजबूत है। दोनों देश अमेरिकी प्रभुत्व को लेकर कई मुद्दों पर समान चिंताएं रखते हैं। दोनों के आर्थिक और कूटनीतिक हित एक-दूसरे से जुड़े हैं। अमेरिका के सहयोगी देशों के साथ भी उसके संबंधों में कई बार अनिश्चितता दिखाई देती है। फिर भी आज अमेरिका के लिए रूस और चीन के बीच पुराने जमाने जैसी दरार पैदा करना आसान नहीं है।

चौथा सवाल क्या यही अमेरिकी डीप स्टेट का गेम प्लान है? क्योंकि ट्रंप भी अब इनके सामने घुटने टेक चुके हैं। मिड टर्म चुनावों में अपनी रिपब्लिकन पार्टी की हुई फजीहत से बौखलाए हुए भी हैं। लिहाजा इस सवाल को तीन अलग-अलग अवधारणाओं में समझना जरूरी है:- एक, डीप स्टेटः स्थायी प्रशासनिक, सुरक्षा और संस्थागत नेटवर्क का प्रभाव। दो, अमेरिकी रणनीतिक प्रतिष्ठानः विदेश नीति, रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े संस्थान एवं नीति निर्माता। तीन, ट्रंप की व्यक्तिगत कूटनीतिः नेताओं से सीधे बातचीत और द्विपक्षीय सौदेबाजी। उल्लेखनीय है कि अमेरिका में सत्ता बदलने के बावजूद राष्ट्रीय सुरक्षा संस्थानों, रक्षा प्रतिष्ठानों और विदेश नीति से जुड़े स्थायी हित बने रहते हैं।

लेकिन यह मान लेना कि इन सभी संस्थानों का कोई एक गुप्त और सर्वसम्मत गेम प्लान है, मौजूदा उपलब्ध प्रमाणों से पुष्ट नहीं होता। इसलिए डीप स्टेट की परिकल्पना को एक राजनीतिक व्याख्या के रूप में देखना चाहिए, स्थापित तथ्य के रूप में नहीं।

पांचवां सवाल यह है कि क्या 19 नवंबर की त्रिपक्षीय बैठक के पांच बड़े सवाल का संतुलित जवाब मिलेगा? चूंकि, ट्रंप, पुतिन और शी जिनपिंग की शेनझेन में प्रस्तावित त्रिपक्षीय बैठक पर पूरी दुनिया की नजरें बनी हुई हैं, क्योंकि इस बैठक से जुड़े पांच महत्वपूर्ण सवाल हैं: एक, क्या यूक्रेन युद्ध के समाधान पर कोई साझा रास्ता निकलेगा? दो, क्या चीन को अमेरिका-रूस परमाणु हथियार नियंत्रण वार्ता में शामिल करने की कोशिश सफल होगी?

सरोकार

मानवीय संवेदनाओं, बदलते रिश्तों और जीवन की सच्चाइयों का दस्तावेज है 'समझोगे नहीं तुम'

साहित्य का वास्तविक उद्देश्य केवल समाज की घटनाओं को शब्दों में पिरोना नहीं, बल्कि उन भावनाओं और परिस्थितियों को अभिव्यक्ति देना भी है, जिन्हें मनुष्य अक्सर अपने भीतर दबाकर रखता है। प्रेम की अनुभूति, रिश्तों की उलझन, मन की बेचैनी, आत्मसम्मान का प्रश्न और सामाजिक जीवन में बढ़ता दिखावा ऐसे विषय हैं, जो हर दौर में प्रासंगिक बने रहते हैं। कथाकार मनोज कुमार प्रीत का कथा-संग्रह 'समझोगे नहीं तुम' इन्हीं जीवनगत सच्चाइयों को अलग-अलग परिस्थितियों और पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इसकी सात कहानियां पाठकों को मानवीय स्वभाव की उन परतों तक ले जाती हैं, जहां भावनाओं के साथ-साथ व्यवहार, सोच और परिस्थितियों की भी परीक्षा होती है। इस संग्रह की एक खास बात इसका प्रस्तुतीकरण है। इसमें सात कहानियां शामिल हैं, लेकिन किसी भी कहानी को अलग शीर्षक नहीं दिया गया है। हिंदी कहानी लेखन की स्थापित परंपरा से अलग यह प्रयोग पाठकों की जिज्ञासा बनाए रखता है। शीर्षक के माध्यम से कहानी का संकेत देने के बजाय लेखक ने उसकी विषयवस्तु और पात्रों को ही अपनी पहचान बनाने का अवसर दिया है। पाठक जब कहानी पढ़ना शुरू करता है, तो वह बिना किसी पूर्व धारणा के उसके घटनाक्रम से जुड़ता चला जाता है। कहानी के अंत तक पहुंचने पर उसके भावार्थ और उद्देश्य को समझने की प्रक्रिया पूरी होती है। इस दृष्टि से यह प्रयोग संग्रह को विशिष्ट बनाता है। पहली कहानी प्रेम की निश्छलता और भावनात्मक प्रतीक्षा को केंद्र में रखती है। इसकी नायिका कविशा का व्यक्तित्व प्रेम के प्रति गंभीर और संवेदनशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उसका कथन, 'कुछ प्रश्नों के उत्तर नहीं होते, बस समय ही उनका उत्तर देने में सहायक होता है।' जीवन की उन परिस्थितियों को सामने लाता है, जहां मनुष्य चाहकर भी अपने सवालों का समाधान नहीं खोज पाता। प्रेम में कई बार अपेक्षाएं, परिस्थितियां और मन की दुविधाएं ऐसे प्रश्न खड़े कर देती हैं, जिनका उत्तर तत्काल मिलना संभव नहीं होता। समय के साथ अनुभव बदलते हैं और कई अनकही बातें स्वयं स्पष्ट होने लगती हैं। लेखक ने इस कहानी में प्रेम की भावुकता के साथ धैर्य और प्रतीक्षा के महत्व को भी रेखांकित किया है।

दूसरी कहानी वर्तमान पीढ़ी की जीवनशैली और आधुनिक समाज में तेजी से बदलते मानवीय व्यवहार पर केंद्रित है। बड़े शहरों की भागदौड़, धन कमाने की प्रतिस्पर्धा और भौतिक सुविधाओं की चाह ने मनुष्य को इतना व्यस्त कर दिया है कि उसके पास दूसरों की भावनाओं को समझने का समय कम होता जा रहा है। शिक्षा का विस्तार हुआ है, तकनीक ने जीवन को आसान बनाया है और लोगों के पास संवाद के अनेक साधन उपलब्ध हैं, फिर भी भावनात्मक दूरी बढ़ रही है। लेखक इस स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहता है, 'शिक्षा हमें तर्क-वितर्क सिखा सकती है, लेकिन जीवन में जीवंतता बनाए रखने हेतु सहिष्णुता, संवेदना और समर्पण हमें सीखना पड़ता है।' यह विचार स्पष्ट करता है कि शिक्षित होने का अर्थ केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि मानवीय गुणों को अपने आचरण में उतारना भी है।

तीसरी कहानी आर्थिक समृद्धि और पारिवारिक आत्मीयता के बीच पैदा हो रहे विरोधाभास को उजागर करती है। आज के दौर में सफलता का आकलन अक्सर व्यक्ति की आमदनी, संपत्ति और सामाजिक हैसियत से किया जाने लगा है। परिवार के लिए अधिक सुविधाएं जुटाने की कोशिश में कई लोग परिवार को ही पर्याप्त समय नहीं दे पाते। घर में सुख-सुविधाओं के साधन बढ़ते जाते हैं, लेकिन रिश्तों में संवाद और अपनापन कम होने लगता है। लेखक ने इस विडंबना को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। कहानी का मूल भाव यह है कि धन से जीवन की आवश्यकताएं पूरी की जा सकती हैं, लेकिन विश्वास, स्नेह और भावनात्मक जुड़ाव खरीदे नहीं जा सकते।

चौथी कहानी प्रेम के आध्यात्मिक और निस्वार्थ स्वरूप की व्याख्या करती है। इसमें लेखक का कथन, 'प्रेम दर्शन का विषय है, न कि प्रदर्शन का; प्रेम प्रार्थना है, न कि स्वार्थ।' विशेष अर्थ रखता है। वर्तमान समय में संबंधों के बीच दिखावे और व्यक्तिगत अपेक्षाओं का प्रभाव बढ़ा है। कई बार लोग प्रेम की गहराई को उसके सार्वजनिक प्रदर्शन और बाहरी अभिव्यक्ति से मापने लगते हैं। जबकि वास्तविक प्रेम किसी प्रमाण या प्रचार का मोहताज नहीं होता। उसमें दूसरे व्यक्ति के प्रति सम्मान, विश्वास और बिना किसी स्वार्थ के समर्पित रहने का भाव शामिल होता है। कहानी इसी मानवीय और आत्मिक पक्ष को पाठकों के सामने रखती है।

पांचवीं कहानी फागुनी के चरित्र के माध्यम से स्त्री मन और वैवाहिक संबंधों की जटिलता को सामने लाती है। विवाह से पहले फागुनी अपने मंगेतर के प्रति त्याग और समर्पण की ऐसी मिसाल पेश करती है कि उसे मौत के मुंह से बचाने के लिए संघर्ष करती है। लेकिन विवाह के बाद उसका व्यवहार पूरी तरह बदल जाता है। वह बिना किसी स्पष्ट कारण के पति को छोड़कर चली जाती है और संबंध-विच्छेद का नोटिस भेज देती है। उसके इस निर्णय से पाठक के सामने अनेक सवाल खड़े होते हैं। क्या व्यक्ति का व्यवहार परिस्थितियों के साथ बदल जाता है? क्या रिश्तों में दिखाई देने वाला समर्पण हमेशा स्थायी होता है? लेखक ने इस चरित्र के जरिए संबंधों की अनिश्चितता और मानवीय मनोविज्ञान के जटिल पक्ष को उभारा है।

छठी कहानी की नायिका रज्जो के माध्यम से प्रेम और आत्मसम्मान के महत्व को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है। किसी भी संबंध में प्रेम के साथ सम्मान का होना अनिवार्य है। केवल भावनात्मक जुड़ाव के आधार पर किसी रिश्ते को लंबे समय तक नहीं निभाया जा सकता, यदि उसमें व्यक्ति के स्वाभिमान और स्वतंत्र अस्तित्व की अनदेखी हो रही हो।

आसियान मंच : भारत का दबदबा, मोदी की कूटनीतिक गूंज

किसी देश का वैश्विक प्रभाव केवल उसकी आर्थिक शक्ति, सैन्य क्षमता या जनसंख्या से तय नहीं होता, बल्कि इस बात से भी तय होता है कि विश्व की महत्वपूर्ण शक्तियाँ उसकी बात को कितनी गंभीरता से सुनती हैं। आज भारत इसी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। दक्षिण-पूर्व एशिया के 11 देशों के संगठन आसियान का भारत सदस्य नहीं है, फिर भी उसके सर्वोच्च सम्मेलनों में भारत की उपस्थिति जिस सम्मान और अपेक्षा के साथ होती है, वह भारत की बदलती वैश्विक भूमिका का महत्वपूर्ण संकेत है। हाल ही में फिलीपींस की राजधानी मनीला में हुए 23वें भारत-आसियान शिखर सम्मेलन और 21वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सक्रिय भागीदारी ने इस बदलती तस्वीर को और स्पष्ट किया है। यह दृश्य अपने आप में महत्वपूर्ण है कि भारत आसियान का सदस्य नहीं है, लेकिन आसियान की भविष्य-चर्चा में भारत को अलग रखकर क्षेत्रीय समीकरणों की कल्पना करना कठिन होता जा रहा है। यही भारत की कूटनीतिक यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। 1991 की 'लुक ईस्ट' नीति से शुरू हुई यात्रा 2014 में 'एक्ट ईस्ट' नीति और अब व्यापक हिंद-प्रशांत दृष्टि तक पहुंची है। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं आसियान को भारत की एक्ट ईस्ट नीति और हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण के केंद्र में बताया है।आसियान केवल भौगोलिक समूह नहीं है। यह आर्थिक शक्ति, समुद्री मार्गों, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और हिंद-प्रशांत की रणनीतिक राजनीति का महत्वपूर्ण केंद्र है। इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम, फिलीपींस, ब्रुनेई, कंबोडिया, लाओस, म्यांमार और तिमोर-लेस्ते जैसे देश भारत के लिए व्यापार, निवेश, समुद्री सुरक्षा, तकनीक और सांस्कृतिक संपर्क की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। मनीला में प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट किया कि भारत और आसियान को प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयोग को आधार बनाकर शांति, स्थिरता और विकास का वातावरण तैयार करना चाहिए। उन्होंने मुक्त, खुले, समावेशी और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत के प्रति भारत की प्रतिबद्धता दोहराई और आसियान की एकता तथा केंद्रीयता को भारत के लिए महत्वपूर्ण बताया। यह केवल कूटनीतिक भाषा नहीं है। इसके पीछे भारत की दीर्घकालीन रणनीति है-ऐसा हिंद-प्रशांत जिसमें किसी एक शक्ति का वर्चस्व न हो, छोटे देशों को अपनी स्वतंत्र विदेश नीति चलाने की जगह मिले और समुद्री मार्ग खुले रहें।

प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति का एक विशिष्ट पक्ष यह है कि उन्होंने भारत को केवल 'बड़ा बाजार' या 'उभरती अर्थव्यवस्था' के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय एक विश्वसनीय रणनीतिक साझेदार के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। मनीला में इसका प्रमाण अनेक द्विपक्षीय मुलाकातों में दिखाई दिया। फिलीपींस के राष्ट्रपति फर्डिनेंड मार्कोस जूनियर के साथ मोदी ने रक्षा, अंतरिक्ष, रेल, वित्तीय तकनीक तथा व्यापार और निवेश में सहयोग की प्रगति पर चर्चा की। सिंगापुर के प्रधानमंत्री लॉरेंस वोंग के साथ डिजिटल क्षेत्र, कौशल, संपर्क, स्वास्थ्य, रक्षा-सुरक्षा और आर्थिक सहयोग की समीक्षा हुई। थाईलैंड के प्रधानमंत्री अनुतिन चर्नवीराकुल के साथ व्यापार, निवेश, रक्षा, सुरक्षा, संपर्क, डिजिटल तकनीक और सांस्कृतिक संबंधों को आगे बढ़ाने पर विचार हुआ। मोदी की विदेश नीति का संदेश साफ है-भारत संबंधों का केवल दर्शक नहीं, बल्कि संबंधों की नई संरचना का सक्रिय निर्माता बनना चाहता है।

इस पूरी यात्रा में विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। प्रधानमंत्री की राजनीतिक दृष्टि को वैश्विक कूटनीतिक संवाद में ठोस स्वरूप देने में जयशंकर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे केवल विदेश मंत्रालय के प्रशासक नहीं, बल्कि बदलती विश्व-व्यवस्था को समझने वाले रणनीतिक चिंतक के रूप में भारत की विदेश नीति का प्रभावी चेहरा बने हैं। भारत की विदेश नीति में आज एक साथ अमेरिका, रूस, यूरोप, पश्चिम एशिया, जापान, ऑस्ट्रेलिया और आसियान देशों के साथ संबंधों को संतुलित रखने की क्षमता दिखाई देती है। यह संतुलन किसी एक खेमे में जाने के बजाय भारत के राष्ट्रीय हितों के आधार पर संबंधों को आकार देने की नीति को दर्शाता है। जयशंकर की कूटनीति का मूल संदेश भी यही रहा है कि भारत किसी शक्ति के दबाव में नहीं, बल्कि अपने हितों और अपनी सभ्यतागत दृष्टि के आधार पर विश्व से संबंध बनाएगा। प्रधानमंत्री की राजनीतिक सक्रियता और विदेश मंत्री की रणनीतिक कूटनीति का यह संयोजन भारत की विदेश नीति को अधिक प्रभावशाली बना रहा है। मनीला सम्मेलन के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और प्रधानमंत्री मोदी की उपस्थिति ने भी इस यात्रा को विशेष महत्व दिया। 17 नवंबर को मनीला में पहली बार क्वाड नेताओं का शिखर-स्तरीय संवाद हुआ, जिसमें मोदी, ट्रंप, जापान की प्रधानमंत्री ताकाइची साने और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज शामिल हुए। इस घटनाक्रम का संदेश बहुत व्यापक है। भारत एक ओर आसियान के साथ अपने संबंधों को मजबूत कर रहा है, दूसरी ओर अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड के माध्यम से हिंद-प्रशांत की रणनीतिक संरचना को भी मजबूत कर रहा है।

नजरिया

ग्रहों की बाधाओं से मुक्ति की आस्था, श्रीकालहस्ती में वायु रूप में विराजते हैं भगवान शिव



उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती

दक्षिण भारत की धरती पर अनेक ऐसे प्राचीन मंदिर स्थित हैं, जिनका धार्मिक महत्व सदियों से श्रद्धालुओं को आकर्षित करता रहा है। इन मंदिरों की विशेषता केवल उनकी विशालता, सुंदर स्थापत्य और ऐतिहासिक विरासत नहीं है, बल्कि इनसे जुड़ी पौराणिक कथाएं भी इन्हें विशिष्ट पहचान देती हैं। आंध्र प्रदेश के तिरुपति के निकट स्वर्णमुखी नदी के तट पर स्थित श्रीकालहस्ती मंदिर ऐसा ही एक अद्भुत शिवधाम है। भगवान शिव को समर्पित इस मंदिर को दक्षिण कैलाश के नाम से भी जाना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, यहां महादेव वायु तत्व के रूप में विराजमान हैं। यही वजह है कि पंचभूत स्थलों में इस मंदिर का विशेष स्थान है। शिवभक्तों के लिए यह स्थान जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही ज्योतिषीय मान्यता रखने वाले श्रद्धालुओं के लिए भी खास है। यहां होने वाली राहु-केतु पूजा के लिए देश के अलग-अलग हिस्सों से भक्त पहुंचते हैं और भगवान शिव से जीवन की परेशानियों से मुक्ति की कामना करते हैं।

श्रीकालहस्ती मंदिर का इतिहास और इसकी धार्मिक पहचान कई प्राचीन मान्यताओं से जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि इस मंदिर का नाम तीन ऐसे जीवों के नाम पर पड़ा, जिन्होंने भगवान शिव के प्रति अपनी अनन्य भक्ति का परिचय दिया था। इन तीन भक्तों में मकड़ी, सर्प और हाथी शामिल थे। इनके नामों से ही श्रीकालहस्ती शब्द की उत्पत्ति मानी जाती है। इस कथा के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि भगवान शिव की दृष्टि में भक्त की जाति, स्वरूप, सामाजिक स्थिति अथवा पूजा करने का तरीका महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि उसकी श्रद्धा और भावना सर्वोपरि होती है। पौराणिक कथा के अनुसार, एक मकड़ी प्रतिदिन शिवलिंग के आसपास जाला बुनती थी। उसका उद्देश्य शिवलिंग को धूल, मिट्टी और बारिश से बचाना था। वह अपने इस प्रयास को भगवान की सेवा मानती थी। दूसरी ओर एक सर्प शिवलिंग पर बहुमूल्य मणियां और रत्न अर्पित करता था। वह अपनी ओर से भगवान को सबसे मूल्यवान वस्तु भेंट करना चाहता था। वहीं एक हाथी प्रतिदिन स्वर्णमुखी नदी से अपनी सूंड़ में जल भरकर लाता और शिवलिंग का अभिषेक करता था।

तीनों की भक्ति सच्ची थी, लेकिन पूजा करने के तरीके अलग-अलग थे। हाथी जब शिवलिंग पर जल चढ़ाता तो मकड़ी का बनाया जाला टूट जाता और सर्प द्वारा चढ़ाए गए रत्न भी हट जाते। मकड़ी और सर्प को यह अपनी भेंट का अपमान लगता, जबकि हाथी शिवलिंग को स्वच्छ रखने के भाव से ऐसा करता था। धीरे-धीरे तीनों के बीच संघर्ष बढ़ गया। कथा के अनुसार, इस संघर्ष में तीनों की मृत्यु हो गई। उनकी निष्कपट भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और उन्हें मोक्ष प्रदान किया। इसी घटना के बाद यह स्थान श्रीकालहस्ती के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह कथा भारतीय भक्ति परंपरा में समानता और समर्पण का सुंदर उदाहरण मानी जाती है।

इस मंदिर की पहचान भगवान शिव के परम भक्त कणप्पा की कथा के बिना अधूरी है। कणप्पा की भक्ति को इतना महान माना जाता है कि आज भी उनका नाम शिवभक्तों के बीच अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, कणप्पा एक शिकारी समुदाय में जन्मे थे। उन्हें वेदों और शास्त्रों का ज्ञान नहीं था और न ही वह पारंपरिक पूजा-पद्धतियों से परिचित थे। लेकिन उनके हृदय में भगवान शिव के प्रति अपार प्रेम था।

एक दिन जंगल में शिकार करते समय उन्हें एक शिवलिंग दिखाई दिया। उसे देखते ही उनके मन में श्रद्धा जाग उठी और उन्होंने शिवलिंग की सेवा शुरू कर दी। वह भगवान को अपना सबसे प्रिय मानते थे। प्रतिदिन शिकार से प्राप्त मांस को भोजन के रूप में अर्पित करते और अपने मुंह में पानी भरकर लाते हुए शिवलिंग का अभिषेक करते थे। उनके लिए यह सब भगवान के प्रति प्रेम जताने का सहज तरीका था। वह दिन-रात शिवलिंग की देखभाल करते और किसी भी खतरे से उसकी रक्षा करने के लिए तैयार रहते थे।

एक दिन कणप्पा ने देखा कि शिवलिंग की एक आंख से रक्त बह रहा है। यह देखकर वह बेहद दुखी हुए। उन्होंने रक्त रोकने के कई प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली। अंत में उन्होंने अपनी एक आंख निकालकर शिवलिंग पर अर्पित कर दी।

मालिक जयेश जगशी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित कर महाराष्ट्र ग्रेन स्टोर्स, 28, डॉ. भगवानदास इंद्रजीत रोड, वालकेश्वर, मलबार हिल, मुंबई-400006 से प्रकाशित किया।
संपादकः **अश्विनी कुमार दुबे** (पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के ल

बीएचयू में दो दिवसीय स्वास्थ्य मेले एवं प्रदर्शनी का शुभारंभ, पहले दिन 7 हजार लोगों ने उठाया लाभ

वाराणसी। काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के चिकित्सा विज्ञान संस्थान के 66वें वार्षिक दिवस के अवसर पर दो दिवसीय स्वास्थ्य मेले एवं प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया। के.एन. उडुप्पा सभागार में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने किया। उन्होंने विभिन्न विभागों की ओर से लगाए गए स्टॉलों का निरीक्षण किया और वहां उपलब्ध स्वास्थ्य संबंधी जानकारियों का अवलोकन किया।

मेले में चिकित्सा विज्ञान संस्थान के विभिन्न विभागों द्वारा आम नागरिकों को अलग-अलग बीमारियों के लक्षण, बचाव और उपचार के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दी



जा रही हैं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. चतुर्वेदी ने कहा कि संस्थान द्वारा स्थापना दिवस को केवल उत्सव के रूप में मनाने के बजाय विद्यार्थियों और आम नागरिकों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के अवसर के रूप में आयोजित करना सराहनीय पहल है। उन्होंने मेले में अधिक से अधिक लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करने पर जोर दिया, ताकि इसका लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंच सके।

कुलपति ने सुझाव दिया कि स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां सरल हिंदी और गैर-तकनीकी भाषा में दी जानी चाहिए। बीमारियों के बारे में बताते समय सबसे पहले उनके लक्षण, बचाव और उपचार पर ध्यान केंद्रित किया जाए। उन्होंने कहा कि मेले का उद्देश्य लोगों को जागरूक करने के साथ ही उन्हें समय पर उचित चिकित्सा सुविधा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना भी है।

चिकित्सा विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. एस.एन. संखवार ने बताया कि स्वास्थ्य मेले में मरीजों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा एवं तकनीक के माध्यम से विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। वहीं, आईआईटी-बीएचयू के डीन रिसर्च एंड डेवलपमेंट प्रो. राजेश कुमार ने बताया कि कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी और आईआईटी-बीएचयू के निदेशक प्रो. अमित पात्रा के मार्गदर्शन में दोनों संस्थान संयुक्त रूप से अनुसंधान कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि लगातार दूसरे वर्ष चैलेंज ग्रांट के अंतर्गत दोनों संस्थानों के सहयोग से 10 करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाएं स्वीकृत हुई हैं।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के न्यूजलेटर का विमोचन भी किया गया। आम नागरिकों को स्वास्थ्य मेले की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराने के लिए क्यूआर कोड की व्यवस्था की गई है। जनजागरूकता के उद्देश्य से कठपुतली प्रदर्शन के माध्यम से मिर्गी, हृदय रोग और लकवा जैसी बीमारियों के बारे में भी जानकारी दी गई।

मेले के संयोजक प्रो. टी.पी. चतुर्वेदी तथा सह-संयोजक प्रो. बी. राम और प्रो. एस.के. भारतीय ने बताया कि पहले दिन करीब 2,500 स्कूली विद्यार्थियों सहित लगभग 7,000 लोगों ने विभिन्न स्टॉलों का भ्रमण किया। लोगों ने रक्त संबंधी महंगी जांचों, ब्लड प्रेशर सहित अन्य महत्वपूर्ण स्वास्थ्य जांचों और चिकित्सकीय परामर्श का लाभ उठाया। विद्यार्थियों में चिकित्सा और तकनीक को समझने के प्रति विशेष उत्साह दिखाई दिया।

पेड़ों की छांव में सजी मुशायरे की महफिल, शकील आज़मी समेत नामचीन शायरों ने पेश किया कलाम

वाराणसी/चंदौली। चंदौली जिले के भड़सर गांव में प्रसिद्ध शायर अतीक़ अंज़र के पैतृक आवास पर एक यादगार मुशायरे का आयोजन किया गया। हरे-भरे पेड़ों की छांव और खुले आसमान के नीचे सजी इस साहित्यिक महफिल में प्रसिद्ध शायर एवं फिल्मी गीतकार शकील आज़मी समेत देश के कई नामचीन शायरों ने अपनी रचनाओं से समां बांध दिया। श्रोताओं ने शायरों के कलाम पर जमकर दाद दी और पूरी महफिल देर रात तक शायरी के रंग में डूबी रही। शकील आज़मी के सम्मान में आयोजित इस विशेष मुशायरे का प्राकृतिक वातावरण आकर्षण का केंद्र रहा। सागौन, अशोक, नीम और सहजन के पेड़ों से घिरे परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम ने साहित्य और प्रकृति का अनूठा संगम प्रस्तुत किया। इस दौरान शकील आज़मी का चर्चित



शेर, 'मैं ग़ज़ल पढ़ रहा था जंगल में, पेड़ सब तालियां बजा रहे थे' महफिल के माहौल से पूरी तरह मेल खाता नजर आया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शायर अतीक़ अंज़र के स्वागत संबोधन से हुआ। समारोह की अध्यक्षता समाजसेवी एवं अधिवक्ता संजय सिंह ने की, जबकि संचालन डॉ. अज़हर सईद ने किया। मुशायरे में शकील आज़मी, अतीक़ अंज़र, आलम बनारसी, निज़ाम बनारसी, सुहैल उस्मानी, ज़िया अहसनी, कबीर अजमल, कमाल बलियावी, सुरेश कुमार अकेला, आकाश मिश्रा, राजीव विश्वकर्मा, शमशाद अलबेला, हरिबंस बवाल और डॉ. बख़्तियार नवाज़ सहित अनेक शायरों ने अपनी बेहतरीन रचनाएं प्रस्तुत कीं। शाम सात बजे शुरू हुआ यह मुशायरा रात 12 बजे तक चला। पांच घंटे तक चली इस साहित्यिक महफिल में स्थानीय लोगों के साथ-साथ दूरदराज के क्षेत्रों से आए साहित्य प्रेमियों ने भी उत्साहपूर्वक भागीदारी की। शायरों की रचनाओं पर श्रोताओं की वाहवाही और तालियों से पूरा परिसर गूंजता रहा।

कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय एकता फाउंडेशन के अध्यक्ष अब्दुल कय्यूम खान ने सभी अतिथियों, शायरों और उपस्थित श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

भिवंडी के माऊली ऑर्केस्ट्रा बार पर पुलिस का छापा

24 बार बालाओं व सिंगरों समेत 65 पर केस दर्ज

रात 2 बजे नारपोली पुलिस की कार्रवाई, 34 ग्राहकों को शराब परोसने और अश्लील हावभाव करने का आरोप

भिवंडी। शहर के वलगांव इलाके में देर रात तक संचालित हो रहे माऊली ऑर्केस्ट्रा बार एंड रेस्टोरेंट पर नारपोली पुलिस ने बुधवार देर रात करीब 2 बजे छापेमारी की। इस कार्रवाई में 16 महिला बार बालाओं और 8 महिला सिंगरों समेत कुल 65 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस की इस कार्रवाई से इलाके के ऑर्केस्ट्रा बार संचालकों में हड़कंप मच गया है। पुलिस के अनुसार, माऊली ऑर्केस्ट्रा बार में निर्धारित नियमों का उल्लंघन कर देर रात तक गतिविधियां संचालित किए जाने की सूचना मिली थी। सूचना के आधार पर नारपोली पुलिस की टीम ने बुधवार देर रात बार में अचानक छापा मारा। मौके पर जांच के दौरान



16 महिला बार बालाएं और 8 महिला सिंगर मौजूद मिलीं।

आरोप है कि बार में मौजूद महिलाएं 34 ग्राहकों के पास जाकर उन्हें शराब परोस रही थीं। साथ ही, ग्राहकों के सामने कथित तौर पर अश्लील हावभाव भी किए जा रहे थे। पुलिस ने मौके पर मौजूद लोगों की गतिविधियों की जांच की और नियमों के उल्लंघन से जुड़े तथ्यों के आधार पर कार्रवाई की।

इस मामले में बार मैनेजर प्रवीण पुजारी सहित कुल 65 लोगों के खिलाफ नारपोली पुलिस स्टेशन में विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। पुलिस अब मामले से जुड़े सभी पहलुओं की जांच कर रही है। गौरतलब है कि भिवंडी में देर रात तक संचालित होने वाले ऑर्केस्ट्रा बार की कार्यप्रणाली समय-समय पर सवालों के घेरे में आती रही है। माऊली बार पर हुई इस कार्रवाई ने एक बार फिर बार संचालन से जुड़े नियमों के पालन और पुलिस निगरानी को लेकर चर्चा तेज कर दी है।

महानगर महिला मोर्चा की परिचयात्मक बैठक एवं सम्मान समारोह आयोजित, संगठन को मजबूत बनाने पर जोर

वाराणसी। महानगर महिला मोर्चा की परिचयात्मक बैठक एवं सम्मान समारोह का आयोजन 19 नवंबर को गुलाब बाग स्थित महानगर कार्यालय में उत्साहपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में नवनियुक्त पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के बीच परिचय एवं आपसी समन्वय स्थापित किया गया। साथ ही संगठन और समाज के लिए उत्कृष्ट योगदान देने वाली महिलाओं को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महानगर अध्यक्ष प्रदीप अग्रहरि ने कहा कि महिला मोर्चा संगठन की रीढ़ है। जमीनी स्तर पर महिलाओं को संगठन से जोड़ने और उन्हें सशक्त बनाने में इसकी महत्वपूर्ण



भूमिका है। उन्होंने विश्वास जताया कि नई ऊर्जा और सक्रियता के साथ महिला मोर्चा आगामी जनसंपर्क अभियानों एवं संगठनात्मक गतिविधियों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएगा।

महानगर महिला मोर्चा अध्यक्ष प्रज्ञा पाण्डेय ने सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए कहा कि टीम भावना और अनुशासन किसी भी संगठन की सबसे बड़ी ताकत हैं। उन्होंने कहा कि महिला मोर्चा की प्रत्येक पदाधिकारी समाज और संगठन के बीच सेतु बनकर कार्य करेगी तथा विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करने का प्रयास करेगी।

महानगर महामंत्री पूजा दीक्षित ने अपने संबोधन में कहा कि नारी शक्ति आज प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता का परिचय दे रही है। उन्होंने महिला पदाधिकारियों से एकजुट होकर समाज के अंतिम पायदान पर खड़ी महिलाओं तक पहुंचने और उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का संचालन अमृता गुप्ता ने किया, जबकि अतिथियों एवं पदाधिकारियों के प्रति आभार प्रीति पुरोहित ने व्यक्त किया।

इस अवसर पर आरती पाठक, नेहा कक्कड़, चंद्रकला, सपना सिंह, उषा सिंह, सरिता गुप्ता, पूनम जायसवाल, अनीशा शाही, संगीता साहू, दीपशिखा, तरुणा चतुर्वेदी और ज्योति प्रजापति सहित महानगर महिला मोर्चा की पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहीं।

ऑडी इंडिया का 5 साल में बाजार हिस्सेदारी दोगुनी करने का लक्ष्य



मुंबई। ऑडी इंडिया अगले 3–5 वर्षों में अपनी बाजार हिस्सेदारी 8% से बढ़ाकर 15–16% करने की तैयारी में है। इसके लिए कंपनी नए मॉडल लॉन्च करने, शोरूम नेटवर्क बढ़ाने और ग्राहक अनुभव बेहतर बनाने पर जोर देगी।

कंपनी 2027 तक शोरूम की संख्या 28 से बढ़ाकर 40 करने की योजना बना रही है। नई ऑडी Q3 से बिक्री बढ़ने की उम्मीद है, जबकि A5 को 2027 की पहली छमाही में लॉन्च किया जाएगा। कंपनी को 2027 में दोहरे अंकों की वृद्धि की उम्मीद है।

भिवंडी में FDA का बड़ा छापा, 2.06 करोड़ का खाद्य स्टॉक जब्त; कंपनी का लाइसेंस निलंबित

भिवंडी। भिवंडी ग्रामीण क्षेत्र में खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग से छेड़छाड़ का गंभीर मामला सामने आया है। महाराष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन (FDA) ने गोपनीय सूचना के आधार पर DXP Ventures India Pvt. Ltd. के गोदाम पर छापेमारी कर 2 करोड़ 6 लाख 21 हजार 243 रुपये मूल्य के खाद्य पदार्थ जब्त किए हैं। मामले की गंभीरता को देखते हुए FDA ने 19 नवंबर को कंपनी का खाद्य व्यवसाय लाइसेंस निलंबित कर दिया है।

FDA के अनुसार, कंपनी के गोदाम में आयातित खाद्य पदार्थों के पैकेट पर दर्ज मूल मैन्युफैक्चरिंग डेट, एक्सपायरी डेट और अधिकतम खुदरा मूल्य (MRP) को थिनर से मिटाकर दोबारा प्रिंट किए जाने का आरोप है। इस संबंध में 18 और 19 नवंबर को गोदाम एवं प्रतिष्ठान पर कार्रवाई की गई।



कार्रवाई के दौरान अधिकारियों को मौके से थिनर, तारीख और MRP की दोबारा छपाई करने वाली स्टैंपिंग मशीनें तथा अन्य सामग्री बरामद हुई। प्रारंभिक जांच में खाद्य पैकेटों पर अनिवार्य जानकारियों के साथ अनधिकृत छेड़छाड़ किए जाने की बात सामने आई है।

14 प्रकार के खाद्य पदार्थ जब्त

FDA ने कार्रवाई के दौरान स्पार्कलिंग वॉटर, एनर्जी ड्रिंक, सऊदी कॉकटेल, सोडा, प्रीमियम सोडा वॉटर, जिंजर सोडा और A2 बिलोना देसी घी समेत कुल 14 प्रकार के खाद्य पदार्थ जब्त किए हैं। जब्त माल की कुल कीमत 2,06,21,243 रुपये बताई गई है। फिलहाल पूरे स्टॉक को प्रशासन के नियामक नियंत्रण में रखा गया है तथा उत्पादों की पैकेजिंग, लेबल और संबंधित दस्तावेजों की जांच की जा रही है।

ग्राहकों की सेहत से जुड़ा गंभीर मामला

खाद्य पदार्थों की मैन्युफैक्चरिंग और एक्सपायरी डेट में कथित बदलाव उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा कर सकता है। इससे ग्राहकों को उत्पाद की वास्तविक गुणवत्ता और सुरक्षित उपयोग अवधि की सही जानकारी नहीं मिल पाती। साथ ही, किसी उत्पाद में खराबी सामने आने पर उसकी पहचान और बाजार से उसे वापस मंगाने में भी परेशानी हो सकती है।

खाद्य सुरक्षा कानून के तहत कार्रवाई

यह कार्रवाई FDA के ठाणे विभाग-10 के सहायक आयुक्त योगेश ढाणे को मिली गोपनीय सूचना के आधार पर की गई। आयुक्त (खाद्य सुरक्षा) डॉ. तुकाराम मुंढे के मार्गदर्शन में खाद्य सुरक्षा अधिकारी के. वाय. चिपलूणकर और ए. वी. कांडेलकर ने कार्रवाई में हिस्सा लिया।

प्राथमिक जांच में खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 की धारा 23, 26 और 27 के उल्लंघन का मामला सामने आया है। FDA ने सार्वजनिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए कंपनी का खाद्य व्यवसाय लाइसेंस निलंबित कर दिया है। प्रशासन की ओर से मामले की आगे जांच की जा रही है।

किआ की कैरेंस सीएनजी को मिला शानदार रिस्पॉन्स, 6,200 यूनिट्स की बिक्री



मुंबई। किआ इंडिया की कैरेंस सीएनजी और कैरेंस क्लैविस सीएनजी ने सितंबर 2026 में लॉन्च के बाद से 6,200 होलसेल यूनिट्स की बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया है। कंपनी के अनुसार, फैक्ट्री-फिटेड सीएनजी कारों की बढ़ती मांग इस सफलता का प्रमुख कारण है।

दोनों मॉडल 6 और 7 सीटर विकल्पों में उपलब्ध हैं। इनमें आधुनिक फीचर्स, बेहतर आराम और सुरक्षा सुविधाएं दी गई हैं। कैरेंस सीएनजी की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 12.12 लाख रुपये और कैरेंस क्लैविस सीएनजी की 12.39 लाख रुपये है। कंपनी तीन साल बाद 75% तक बायबैक की सुविधा भी दे रही है।

वाराणसी में बैंक रिटायरीज का त्रिवार्षिक सम्मेलन पेंशन अपडेशन और बीमा सुधार की मांग प्रबल

वाराणसी। ऑल इंडिया बैंक रिटायरीज फेडरेशन (AIBRF) वाराणसी इकाई का त्रिवार्षिक सम्मेलन गुरुवार को कमच्छा स्थित यूपी बैंक एम्पलाइज वेलफेयर ट्रस्ट भवन सोसायटी में संपन्न हुआ। सम्मेलन में वाराणसी मंडल के विभिन्न बैंकों के सेवानिवृत्त अधिकारियों और कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

सम्मेलन का उद्घाटन पूर्व कर्मकार निर्देश, इलाहाबाद बैंक तथा यूपीबीईयू वाराणसी इकाई के अध्यक्ष आर.बी. चौबे ने किया। उन्होंने कहा कि पेंशन अपडेशन की मांग को सफल बनाने के लिए बैंक कर्मचारियों और सेवानिवृत्तों की एकता आवश्यक है।

पेंशन अपडेशन की मुख्य मांग

AIBRF वाराणसी इकाई के मंत्री राधेश्याम मिश्र ने बताया कि 1994 में स्थापित AIBRF देश का पुराना बैंक रिटायरीज संगठन है, जिसके लगभग तीन लाख सदस्य हैं। संगठन लगातार भारतीय बैंक संघ (IBA) और वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग को पेंशन अपडेशन, ग्रुप मेडिकल इंश्योरेंस में सुधार तथा अन्य मांगों के समाधान हेतु पत्राचार करता रहा है।

उन्होंने कहा कि 12वें द्विपक्षीय समझौते में पेंशन अपडेशन की मांग को सुप्रीम कोर्ट में लंबित मामले



को आधार बनाकर टाला गया और इसके स्थान पर 2027 तक एक्स-ग्रेसिया के भुगतान की व्यवस्था की गई। संगठन का कहना है कि यह भुगतान पेंशन अपडेशन की मांग से जुड़ा नहीं है और रिटायरीज के उस अधिकार को प्रभावित नहीं करेगा।

सुप्रीम कोर्ट में एम.सी. सिंगला मामला

पेंशन अपडेशन की मांग को लेकर दायर एम.सी. सिंगला मामले पर सुप्रीम कोर्ट में पक्ष और विपक्ष की सुनवाई हो चुकी है। AIBPARC के अक्टूबर 2026 के परिपत्र के अनुसार, 15 अक्टूबर 2026 को सुनवाई के बाद न्यायालय ने मामले का आदेश सुरक्षित रखा था और पक्षों को लिखित तर्क दाखिल करने का समय दिया था।

राधेश्याम मिश्र ने कहा कि न्यायालय के निर्णय से बैंक पेंशनर्स को बड़ी राहत की संभावना है। उन्होंने बताया कि पेंशन अपडेशन के समर्थन में 19 जून 2024 को दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक रिटायरीज ऑर्गेनाइजेशन (UFBRO) का गठन हुआ, जिसमें आठ रिटायरीज संगठन शामिल हुए। UFBRO ने पेंशन अपडेशन, ग्रुप मेडिकल इंश्योरेंस में सुधार और शीर्ष स्तरीय रिटायरीज संगठनों की IBA तथा वित्तीय सेवा विभाग के साथ सीधी वार्ता को अपनी प्रमुख मांगें तय की हैं।[2]

बीमा प्रीमियम पर GST विवाद

सम्मेलन में रिटायरीज के ग्रुप मेडिकल बीमा प्रीमियम पर जीएसटी की वसूली को भी गंभीर मुद्दा बताया गया। मंत्री मिश्र ने आरोप लगाया कि केरल हाई कोर्ट में इस विषय पर मामला लंबित है और स्टे ऑर्डर लागू होने के बावजूद बैंक बीमा प्रीमियम पर जीएसटी वसूल रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह मामला नियमित सुनवाई के दायरे में है।

उन्होंने यह भी बताया कि वेतन में स्पेशल अलाउंस को बार-बार शामिल करने के कारण पेंशन की गणना बुनियादी वेतन के 50 प्रतिशत के बजाय लगभग 38 प्रतिशत पर हो रही है। संगठन का दावा है कि इससे सेवानिवृत्त कर्मचारी पेंशन और रिटायरमेंट लाभों से वंचित रह रहे हैं, जिसके विरोध में केरल हाई कोर्ट में याचिकाएं लंबित हैं।

आंदोलन की चेतावनी

संगठन ने कहा कि यदि पेंशन अपडेशन, ग्रुप मेडिकल इंश्योरेंस सुधार और रिटायरीज संगठनों की सीधी वार्ता संबंधी मांगों का शीघ्र समाधान नहीं होता, तो AIBRF देशभर के विभिन्न शहरों तथा दिल्ली में अनिश्चितकालीन धरना-प्रदर्शन और भूख हड़ताल करने को बाध्य होगा। संगठन ने इसकी जिम्मेदारी IBA और वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवा विभाग पर डाली। AIBRF की नवंबर 2026 की कार्ययोजना में भी दिल्ली में "Pension Updation Now" थीम पर राष्ट्रीय धरने का प्रस्ताव शामिल है।

सम्मेलन में शामिल प्रतिनिधियों ने रिटायरीज की मांगों के प्रति संगठित संघर्ष जारी रखने और सभी बैंक रिटायरीज संगठनों को एक मंच पर लाने का संकल्प लिया।

भिवंडी-कल्याण रोड पर देशी पिस्टल और दो कारतूस के साथ 20 वर्षीय युवक गिरफ्तार

क्राइम ब्रांच की कार्रवाई, 46,550 रुपये का हथियार जब्त; अवैध रूप से हथियार रखने का आरोप

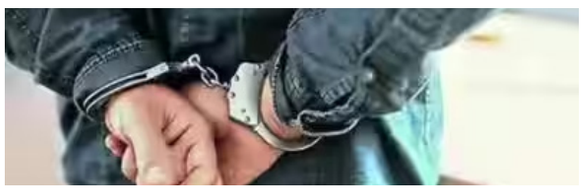

भिवंडी। भिवंडी-कल्याण रोड पर अवैध हथियार लेकर घूम रहे एक 20 वर्षीय युवक को ठाणे क्राइम ब्रांच की टीम ने गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से देशी बनावट का एक पिस्टल और दो जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। जब्त हथियार और कारतूस की कुल कीमत 46,550 रुपये आंकी गई है।

पुलिस के अनुसार, 17 नवंबर 2026 को दोपहर करीब 2:15 बजे भिवंडी-कल्याण रोड पर सरवली स्थित निसर्ग होटल के सामने सार्वजनिक सड़क पर यह कार्रवाई की गई। गिरफ्तार आरोपी की पहचान मोहम्मद इरफान उर्फ अरशलान नसीम अंसारी (20) के रूप में हुई है। वह भिवंडी के शांतिनगर स्थित गायत्रीनगर में चिश्तिया मस्जिद के पास बाबा होटल इलाके का निवासी बताया गया है।

पुलिस जांच में सामने आया कि ठाणे पुलिस आयुक्तालय क्षेत्र में 16 से 30 नवंबर तक महाराष्ट्र पुलिस अधिनियम की धारा 37 (1) और (3) के तहत हथियार लेकर चलने पर प्रतिबंध लागू है। इसके बावजूद आरोपी कथित तौर पर बिना किसी वैध लाइसेंस के देशी पिस्टल और दो जिंदा कारतूस अपने पास रखे हुए था। पुलिस को संदेह है कि हथियार किसी को बेचने अथवा किसी संज्ञेय अपराध को अंजाम देने के उद्देश्य से रखा गया था। हालांकि, इस संबंध में जांच जारी है।

इस मामले में कोनगांव पुलिस स्टेशन में भारतीय हथियार अधिनियम 1959 की धारा 3 और 25(1-ब)(अ) तथा महाराष्ट्र पुलिस अधिनियम की धारा 37(1) और 135 के तहत मामला दर्ज किया गया है।

यह कार्रवाई ठाणे शहर क्राइम ब्रांच की मध्यवर्ती अपराध शाखा के पुलिसकर्मी मयूर गौतम शिरसाट की शिकायत पर की गई। मामले की आगे की जांच सहायक पुलिस निरीक्षक प्रकाश दिनकर कर रहे हैं। पुलिस आरोपी से हथियार के स्रोत और उसके संभावित इस्तेमाल के संबंध में पूछताछ कर रही है।

प्राग में भारतीय रेलवे ने जीती विश्व रेलवे क्रॉस कंट्री चैंपियनशिप, पुरुष और महिला दोनों वर्गों में स्वर्ण पदक



मुंबई। चेक गणराज्य की राजधानी प्राग में 13 से 16 नवंबर 2026 तक आयोजित 18वीं विश्व रेलवे (पुरुष एवं महिला) क्रॉस कंट्री चैंपियनशिप में भारतीय रेलवे ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ओवरऑल चैंपियनशिप का खिताब अपने नाम किया। भारतीय टीम ने पुरुष और महिला दोनों वर्गों में स्वर्ण पदक जीतकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का गौरव बढ़ाया।

इस शानदार सफलता में मध्य रेलवे की खिलाड़ी एवं प्रशिक्षक लाविना लोबो का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके कुशल मार्गदर्शन में भारतीय रेलवे के खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए दोनों वर्गों में स्वर्ण पदक हासिल किए। महिला वर्ग में उत्तर रेलवे की रेणु सिंह और पुरुष वर्ग में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के हरीश ने स्वर्ण पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया। प्रतियोगिता में भारतीय रेलवे के कुल पांच खिलाड़ियों ने पदक हासिल किए, जिनमें तीन पुरुष और दो महिला खिलाड़ी शामिल हैं।

इस अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में 11 देशों के कुल 89 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया, जिनमें भारतीय रेलवे के आठ खिलाड़ी शामिल थे। प्रतियोगिता में भारत के अलावा फ्रांस, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड, चेक गणराज्य, पोलैंड, ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, स्लोवाकिया और बुल्गारिया के खिलाड़ियों ने भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि विश्व रेलवे क्रॉस कंट्री चैंपियनशिप का आयोजन प्रत्येक चार वर्ष में किया जाता है। ऐसे में भारतीय रेलवे की यह उपलब्धि अंतरराष्ट्रीय खेल जगत में एक महत्वपूर्ण सफलता मानी जा रही है। मध्य रेलवे ने इस शानदार उपलब्धि पर भारतीय रेलवे की पूरी टीम को बधाई देते हुए खिलाड़ियों और प्रशिक्षक लाविना लोबो के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

हिन्दी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहार:रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रावाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001, भ्र.ध्व. क्र.:9224733113
ईमेल:rastriyaswabhimaan@gmail com

04 मुंबई, शुक्रवार, 20 नवम्बर 2026 महाराष्ट्र
epaper.rashtriyaswabhimaan.in
www.rashtriyaswabhimaan.com

टैंकरों के मनमाने रेट पर रोक लगाएं; GPS सिस्टम लागू करें -विधायक निरंजन डावखरे की आयुक्त से मांग

ठाणे। शहर में 10 परसेंट पानी कटौती के कारण जहां लोग पानी के लिए भाग रहे हैं, वहीं प्राइवेट टैंकर ड्राइवरों की पैसे की लूट का मामला सामने आया है। मनपा से जहां 10,000 लीटर पानी करीब 700 रुपये में मिलता है, वहीं लोगों से उसी पानी के लिए 3,500 रुपये तक वसूले जा रहे हैं। शिकायतें हैं कि कुछ जगहों पर उन्हें टैंकरों के लिए 8,000 रुपये तक देने पड़ रहे हैं। इस मनमानी पर रोक लगाने के लिए विधायक निरंजन डावखरे ने मनपा आयुक्त सौरभ राव से प्राइवेट टैंकरों के रेट तय करने और एक ऑफिशियल टैरिफ घोषित करने और टैंकरों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन और GPS ट्रैकिंग ज़रूरी करने की मांग की।पानी कटौती के कारण घोड़बंदर, कलवा, मुंब्रा और दिवा इलाकों की कई सोसायटियों को प्राइवेट टैंकरों पर निर्भर रहना पड़ रहा है। लेकिन, टैंकर समय पर नहीं मिलने और कैपेसिटी के हिसाब से रेट में भारी अंतर होने से लोगों का फाइनेंशियल हिसाब-किताब बिगड़ गया है। इसी बैकग्राउंड में, डावखरे ने गुरुवार को आयुक्त से मुलाकात की और शहर में पानी सप्लाई प्लानिंग और दूसरे सिविक मुद्दों पर चर्चा की।प्राइवेट टैंकरों को ऑफिशियली रजिस्टर किया



जाना चाहिए और उनकी कैपेसिटी के हिसाब से रेट तय किए जाने चाहिए। ये रेट मनपा वेबसाइट और वार्ड ऑफिस में पब्लिश किए जाने चाहिए। मुंबई और दूसरे हिस्सों से ठाणे आने वाले टैंकरों का भी रिकॉर्ड होना चाहिए और पानी के सोर्स की जांच होनी चाहिए। लोगों को टैंकर ऑर्डर करने के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की सुविधा दी जानी चाहिए। रजिस्टर्ड टैंकरों में GPS सिस्टम लगाए जाने चाहिए और उनकी लोकेशन और पानी के डिस्ट्रीब्यूशन को कंट्रोल किया जाना चाहिए। उन्होंने मांग की कि तय रेट से ज़्यादा पैसे लेने वाले ड्राइवरों के खिलाफ शिकायत करने के लिए एक अलग सिस्टम बनाया जाना चाहिए।

दूसरे पानी के सोर्स का इस्तेमाल करें

मनपा द्वारा साफ किए गए कुओं और लगाए गए पानी साफ करने के प्रोजेक्ट का पूरी कैपेसिटी से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इससे रोज़ कितना पानी मिल रहा है और कितने लोगों को इसका फायदा हो रहा है, इसकी जानकारी पब्लिक की जानी चाहिए। हर डिपार्टमेंट में पानी सप्लाई का शेड्यूल बताया जाना चाहिए और जिन इलाकों में कम प्रेशर से पानी मिलता है, वहां की दिक्कतों को दूर किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि पुराने पानी के चैनलों की जांच और पानी के लीकेज को रोकने के लिए एक खास कैंपेन चलाया जाना चाहिए।

पारसिक चौपाटी का डेवलपमेंट और महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा

कलवा में पारसिक चौपाटी के रुके हुए डेवलपमेंट के काम को पूरा किया जाना चाहिए और साफ-सफाई, मेंटेनेंस और सुरक्षा का इंतज़ाम किया जाना चाहिए। वॉकिंग ट्रैक पर दोपहिया वाहनों की एंट्री रोकने के लिए सिक्योरिटी गार्ड रखे जाने चाहिए। साथ ही, महिलाओं की सुरक्षा के लिए रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, मार्केट और कॉलेज कैंपस में अंधेरी जगहों पर स्ट्रीट लाइट और CCTV कैमरे लगाए जाने चाहिए। डावखरे ने मांग की कि नगर निगम और पुलिस मिलकर जांच करें और असुरक्षित जगहों पर कदम उठाएं।उन्होंने यह भी साफ किया कि प्रशासन को इन मांगों पर समय पर कार्रवाई करनी चाहिए ताकि लोगों को रेगुलर पानी की सप्लाई, टैंकर सिस्टम में ट्रांसपेरेंसी और बेसिक सुविधाएं मिल सकें।

कार्तिकी एकादशी यात्रा के लिए पंढरपुर में तैयारियां तेज, 5 करोड़ का बजट मंजूर

मुंबई/पंढरपुर। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध तीर्थस्थल पंढरपुर में कार्तिकी एकादशी यात्रा को लेकर तैयारियां तेज कर दी गई हैं। भगवान विट्ठल के दर्शन के लिए महाराष्ट्र सहित देश के विभिन्न हिस्सों से लाखों वारकरियों और श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना को देखते हुए राज्य सरकार और स्थानीय नगरपालिका ने व्यापक व्यवस्थाएं की हैं। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को स्वच्छता, पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं, स्नान और दर्शन की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए विशेष योजना तैयार की गई है। इसके लिए नगरपालिका को पांच करोड़ रुपये की निधि उपलब्ध कराई गई है। यात्रा प्रबंधन के तहत शहर की सड़कों की मरम्मत से लेकर चंद्रभागा नदी के घाटों, सार्वजनिक शौचालयों, स्नानगृहों और दर्शन कतारों तक की व्यवस्थाओं को व्यवस्थित किया जा रहा है। उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने स्वयं पंढरपुर पहुंचकर तैयारियों का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि कार्तिकी यात्रा में आने वाले किसी भी वारकरी को बुनियादी सुविधाओं के लिए परेशानी नहीं होनी चाहिए। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए प्रशासन को विशेष सतर्कता बरतने और सभी व्यवस्थाओं को समय पर पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं। यात्रा की तैयारियों का निरीक्षण करने पहुंचे उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शहर के विभिन्न हिस्सों का मोटरसाइकिल से दौरा किया। इस दौरान उन्होंने प्रमुख सड़कों, श्रद्धालुओं के आवागमन वाले मार्गों और यात्रा से जुड़े महत्वपूर्ण स्थानों पर की जा रही व्यवस्थाओं को देखा। इसके बाद उन्होंने चंद्रभागा नदी में नाव से भ्रमण कर नदी किनारे स्थित घाटों और वहां विकसित की गई सुविधाओं का निरीक्षण किया। चंद्रभागा नदी में स्नान करना वारकरियों की यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। कार्तिकी एकादशी के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु नदी में स्नान करने पहुंचते हैं। ऐसे में घाटों पर सुरक्षा, स्वच्छता, स्नान और कपड़े बदलने की सुविधाओं को लेकर विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं।

विधायक संजय केलकर का भिवाड़ी ग्रामीण दौरा, मुख्य मकसद लोगों की समस्याओं को हल करना है विधायक केलकर

ठाणे। विधायक संजय केलकर ठाणे जिले के ग्रामीण दौरे पर थे और विधायक केलकर ने पत्रकार अमोल कदम के कहने पर भिवंडी ग्रामीण इलाके के सुपेगांव ग्रुप ग्राम पंचायत के सीनियर सदस्य अशोक राउत के घर जाकर उनका सम्मान किया। इस मौके पर विधायक केलकर को शॉल और गुलदस्ता देकर सम्मानित किया गया।मनपा



नगरसेवक विकास पाटिल भी मौजूद थे और उन्हें समाजसेवी राजा पाटिल ने सम्मानित किया।इस अवसर पर प्रकाश कदम, नरेश पाटिल उपस्थित थे।विधायक केलकर से भिवंडी ग्रामीण इलाके की समस्याओं को लेकर बातचीत हुई।विधायक केलकर ने कहा कि उनका मुख्य मकसद इस बार लोगों की समस्याओं को हल करना है।

आयुष्मान योजना को असरदार तरीके से लागू करना इलाज से मना करने वाले अस्पतालों पर सख्त कार्रवाई

ठाणे। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा मिलकर लागू की जा रही आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना और महात्मा ज्योतिराव फुले जन आरोग्य योजना का फायदा आखिरी स्टेज तक पहुंचाने के लिए प्रशासन ने अब बहुत सख्त और कड़ा रुख अपनाया है. सरकार आम नागरिकों को मुफ्त और सही इलाज देने के लिए पूरी तरह तैयार है, और जो प्राइवेट अस्पताल योजना का फायदा देने से मना करेंगे या इलाज में रुकावट डालेंगे, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा, ऐसी सख्त चेतावनी आयुष्मान भारत मिशन महाराष्ट्र कमेटी के चेयरमैन डॉ. ओमप्रकाश शेटे ने दी है. हाल ही में ठाणे जिला कलेक्ट्रेट परिसर में नियोजन भवन में डॉ. ओमप्रकाश शेटे की अध्यक्षता में एक अहम जॉइंट रिव्यू मीटिंग हुई. बैठक में विधायक किसन कथोरे, विधायक निरंजन डावखरे, विधायक सुलभा गायकवाड़, किरण भोईर, जिला कलेक्टर डॉ. श्रीकृष्ण पांचाल, पी.सीईओ अजिंक्य पवार, निवासी उप जिला मजिस्ट्रेट डॉ. संदीप माने, जिला शल्य चिकित्सक डॉ. कैलास पवार, डॉ. धीरज महानगड़े, डॉ. अर्चना पवार, जिला प्रशिक्षण केंद्र स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अंजलि चौधरी, क्षेत्रीय प्रबंधक डॉ. श्रीकांत पुंडकर, वरिष्ठ जिला समन्वयक डॉ. रवींद्र जगतकर, स्वास्थ्य अधिकारी,



आयुष्मान भारत मिशन के जिला समन्वयक आदि उपस्थित थे। इस बैठक में अस्पतालों के सामने आने वाली समस्याओं, जनप्रतिनिधियों द्वारा उठाई गई महत्वपूर्ण शिकायतों और योजना के कार्यान्वयन में कमियों पर गहराई से चर्चा की गई। डॉ. शेटे ने सामने के क्षेत्र में सरकारी योजना के बोर्ड नहीं लगाने वाले और बिना किसी पूर्व सूचना के समीक्षा बैठक से अनुपस्थित रहने वाले निजी अस्पतालों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के आदेश दिए हैं, और उन्होंने संबंधित अधिकारियों को ऐसे अस्पतालों के भुगतान को तुरंत रोकने के निर्देश भी दिए जो बार-बार नियमों का उल्लंघन करते हैं। मीटिंग के दौरान विधायक निरंजन डावखरे ने कुछ बड़े अस्पतालों द्वारा खास जगहों पर स्कीम की जानकारी देने वाले बोर्ड न लगाने का मुद्दा बहुत ज़ोरदार तरीके से उठाया। कई प्राइवेट अस्पतालों द्वारा आयुष्मान कार्ड होल्डर्स को इलाज में प्रायोरिटी न देने की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए, एडमिनिस्ट्रेशन ने साफ किया है कि अब पूरा सिस्टम ऑनलाइन और ट्रांसपेरेंट कर दिया गया है। 26 फरवरी, 2026 को मुख्यमंत्री द्वारा लॉन्च किए गए स्टेट-ऑफ-द-आर्ट 'TMS 2.0' पोर्टल में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का असरदार तरीके से इस्तेमाल किया गया है। इसलिए, अब किसी भी मरीज़ को बिना वजह इलाज से मना करना या क्लेम प्रोसेस में गड़बड़ी करना मुमकिन नहीं है, क्योंकि हर ट्रांज़ैक्शन ट्रांसपेरेंट तरीके से रिकॉर्ड किया जा रहा है। एडमिनिस्ट्रेशन ने इलाज के प्री-अप्रूवल के लिए सिर्फ़ छह घंटे का टाइम लिमिट तय किया है, और अगर इस तय समय में संबंधित क्लेम अप्रूव या रिजेक्ट नहीं होता है, तो नियमों के मुताबिक ऑटोमैटिक अप्रूवल मिलने का ट्रांसपेरेंट प्रोविज़न किया गया है। अगर अस्पताल समय पर टेक्निकल प्रोसेस और डॉक्यूमेंटेशन पूरा कर लेते हैं, तो फंड मिलने में कोई दिक्कत नहीं है। इस बीच, हालांकि कुछ लोगों ने दावा किया है कि अस्पतालों को क्लेम की रकम का सिर्फ़ 25 से 30 परसेंट ही मिलता है, लेकिन अधिकारियों ने इस दावे को पूरी तरह से खारिज कर दिया है। इन सभी वेलफेयर स्कीमों के बारे में जागरूकता के मामले में ठाणे ज़िले की मौजूदा स्थिति देखें, तो ज़िले में कुल 56 लाख 96 हज़ार आयुष्मान लाभार्थी हैं; लेकिन उनमें से सिर्फ़ 16 लाख 37 हज़ार लाभार्थियों को ही असल में अपने कार्ड मिले हैं। इसका मतलब है कि ठाणे ज़िले के लगभग 70 परसेंट नागरिकों के पास अभी भी आयुष्मान कार्ड नहीं हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए, नागरिकों से अपील की गई है कि वे पहल करें और प्रशासन का इंतज़ार किए बिना जल्द से जल्द अपने कार्ड बनवा लें। प्रशासन ने सिस्टम को और आसान बना दिया है ताकि नागरिकों को इलाज के दौरान कोई दिक्कत न हो। अगर कोई अस्पताल इलाज करने से मना करता है, रुकावट डालता है या कोई गड़बड़ी देखी जाती है, तो एक ऑनलाइन पोर्टल, अस्पताल में एक 'QSK' सेंटर और सरकार का टोल-फ्री नंबर 1800 233 22 00 उपलब्ध कराया गया है ताकि नागरिक तुरंत शिकायत कर सकें। साथ ही, खास WhatsApp सुविधा 'आयुष्मान सारथी' के ज़रिए अब घर बैठे कार्ड जारी करने का प्रोसेस पूरा करना और अपनी शिकायतें दर्ज करना बहुत आसान हो गया है, और प्रशासन ने आम लोगों से इन डिजिटल सुविधाओं का ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने की अपील की है। इस मीटिंग में सबसे पहले डॉ. प्रशांत पुंडकर ने कंप्यूटर प्रेजेंटेशन के ज़रिए ज़िले में आयुष्मान भारत मिशन के कामों की रिपोर्ट पेश की।

डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे की लीडरशिप में ठाणे जिले के स्कूलों,स्वास्थ्य और नागरिक सुविधाओं को बदलने का ऐतिहासिक फैसला

ठाणे। राज्य के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे की गाइडेंस में, ठाणे जिले के स्कूलों, प्राइमरी स्वास्थ्य सेंटर, सरकारी अस्पतालों और पब्लिक सुविधाओं के ओवरऑल डेवलपमेंट के लिए जिला प्रशासन ने एक बहुत बड़ा प्लान तैयार किया है। डायरेक्शन कमिटी की मीटिंग में गहराई से चर्चा के बाद, इन सभी प्रोजेक्ट्स को लागू करने में तेज़ी लाई गई है, और 26 जनवरी, 2028 तक, प्रशासन ने राज्य के सभी स्कूलों और स्वास्थ्य सेंटर्स को प्राइवेट स्कूलों की तरह मॉडर्न सुविधाओं से लैस करने का प्लान बनाया है। इन सभी प्रोजेक्ट्स को असरदार तरीके से लागू करने के बारे में आज जिला कलेक्टर के ऑफिस में एक हाई-लेवल मीटिंग रखी गई। इस महत्वपूर्ण बैठक में सांसद डॉ. श्रीकांत शिंदे, विधायक डॉ. बालाजी किणीकर, राजेश मोरे, हेमंत पाटिल, कल्याण-डोंबिवली की महापौर हर्षाली चौधरी, उल्हासनगर के महापौर अश्विनी निकम, जिला कलेक्टर डॉ. श्रीकृष्ण पांचाल, ठाणे मनपा आयुक्त सौरभ राव, कल्याण-डोंबिवली मनपा आयुक्त अभिनव गोयल, उल्हासनगर मनपा आयुक्त मनीषा अव्हाले, कुलगांव-बदलापुर मनपा मुख्य अधिकारी मारुति गायकवाड़, अंबरनाथ मनपा मुख्य



अधिकारी उमाकांत गायकवाड़ और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। इस बैठक और योजना में स्कूलों के आधुनिकीकरण पर विशेष जोर दिया गया है। सांसद डॉ. श्रीकांत शिंदे ने बताया कि शैक्षणिक बुनियादी ढांचे के विकास के लिए उपलब्ध कराए गए निधि का उपयोग बहुत ही उचित तरीके से और सही उद्देश्यों के लिए ही किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत जिले के जिला परिषद, मनपा और नगर पालिका के सभी स्कूलों का गेट से लेकर क्लासरूम, शौचालय और रसोई तक का गहन ऑडिट पूरा हो चुका है। स्कूलों के रेनोवेशन, नए क्लासरूम बनाने और मॉडर्नाइज़ेशन के लिए करीब 550 करोड़ रुपये का बजट फिर से अरेंज करके अवेलेबल कराया गया है। सरकारी स्कूलों को प्राइवेट स्कूलों के स्टैंडर्ड के हिसाब से डिज़ाइन किया जाएगा और उनमें लाइब्रेरी, लैब और AI लैब जैसी मॉडर्न सुविधाएं शामिल होंगी। जहां क्लास साइज़ कम है, वहां क्लास VIII से X तक बढ़ाने और डिमांड के हिसाब से सेमी-इंग्लिश स्कूल शुरू करने के निर्देश दिए गए हैं। अब तक, सभी स्कूलों का एक साथ रेनोवेशन कभी नहीं किया गया है, लेकिन यह पहली बार है जब यह ऐतिहासिक पहल लागू की जा रही है और इस काम को 26 जनवरी, 2028 तक पूरा करने का टारगेट है। हेल्थ सिस्टम को बदलने के लिए, ग्रामीण इलाकों में हेल्थ सर्विसेज़ को बेहतर बनाने के लिए प्राइमरी हेल्थ सेंटर और मॉडल ग्रामीण अस्पतालों के मॉडर्नाइज़ेशन के लिए करीब 250 करोड़ रुपये का प्रोविज़न किया गया है। साथ ही, उल्हासनगर के सेंट्रल अस्पताल को पहले फेज़ में 500 बेड वाले स्टेट-ऑफ-द-आर्ट अस्पताल में बदलने का प्रोसेस तेज़ कर दिया गया है। नागरिक सुविधाओं के विकास के तहत, नगर निगमों और नगर पालिकाओं के वार्डों में खुले स्थान का विकास, खेल सुविधाएं, जिम, पुस्तकालय, बच्चों के लिए खेल के मैदान, वरिष्ठ नागरिकों के लिए आराम क्षेत्र और शौचालय जैसे महत्वपूर्ण तत्वों सहित सामुदायिक स्थान विकसित किए जाएंगे। साथ ही, प्रशासनिक प्रमुखों को प्रत्येक नगर निगम और नगर पालिका में 10 से 15 हजार की आबादी वाली दलित बस्ती को 'पायलट' के रूप में चुनने और वास्तव में नागरिकों के साथ बातचीत करने और उनकी जरूरतों के अनुसार सुविधाएं बनाने के निर्देश दिए गए हैं। पर्यावरणीय उपायों के तहत, वालधुनी और उल्हास नदियों के पुनरोद्धार के लिए एक प्रमुख योजना बनाई गई है और महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडल और एनआईआरआई के सहयोग से नदी में जाने वाले अशोधित सीवेज को पूरी तरह से रोका जाएगा। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में क्लस्टर-आधारित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, खाद और बंद इनडोर परियोजनाओं के माध्यम से अपशिष्ट प्रबंधन किया जाएगा। नदी में प्रदूषित पानी के स्रोत का पता लगाने के लिए ड्रोन का उपयोग करके एक सर्वेक्षण करने का भी सुझाव दिया गया। इन सभी प्रोजेक्ट्स को अच्छे से लागू करने से ठाणे जिले के ग्रामीण और शहरी इलाकों में एजुकेशन और हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर की सूरत पूरी तरह बदल जाएगी, और आम आदमी को अच्छी क्वालिटी की सुविधाएं मिलेंगी।

अंजुर में गर्भवती और दूध पिलाने वाली मांओं को न्यूट्रिशन किट बांटी गईं

NHSRCL और परिजार फाउंडेशन के साथ मिलकर न्यूट्रिशन एक्टिविटीज़

ठाणे। इंटीग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेंट सर्विस स्कीम प्रोजेक्ट भिवंडी-1 के तहत, NHSRCL (नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड) और परिजार फाउंडेशन के साथ मिलकर दिवा-अंजुर बीट में ग्राम पंचायत अंजुर में गर्भवती और दूध पिलाने वाली मांओं को न्यूट्रिशन किट बांटी गईं। 17 नवंबर, 2026 को यह एक्टिविटी मांओं और बच्चों के न्यूट्रिशन का ध्यान रखने और मांओं को न्यूट्रिशनल गाइडेंस देने के मकसद से ऑर्गनाइज़ की गई थी। इस प्रोग्राम में NHSRCL की मैनेजिंग डायरेक्टर अंजुम परवेज़, दीपक रॉय, PCPM/वसई, यू.पी. सिंह, PCPM/मुंबई, चाइल्ड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट ऑफिसर रोहित जाधव, साथ ही CDPO डिपार्टमेंट के सुपरवाइजर श्रीम. कुर्हाड़े मौजूद थे। परिमार्जन फाउंडेशन के सेक्रेटरी गजानन प्रसाद, परिमार्जन फाउंडेशन के असिस्टेंट जनरल सेक्रेटरी आसिफ आजमी और AVP राजीव कुलश्रेष्ठ



और ऑर्गनाइजेशन के दूसरे साथी भी मौजूद थे। ग्राम पंचायत अंजूर इलाके की प्रेग्नेंट और दूध पिलाने वाली मांएं भी बड़ी संख्या में इस इवेंट में शामिल हुईं। इवेंट के दौरान, मौजूद मांओं को न्यूट्रिशन की अहमियत, प्रेग्नेंसी और डिलीवरी के बाद की डाइट और मांओं और बच्चों की हेल्थ का ज़रूरी ध्यान रखने के बारे में गाइड किया गया। क्योंकि प्रेग्नेंसी से ही मांओं का सही न्यूट्रिशन और दूध पिलाने वाली मांओं को ज़रूरी खाना मिलना मांओं और बच्चों की हेल्थ के लिए ज़रूरी है, इसलिए ऐसे इवेंट न्यूट्रिशन के बारे में अवेयरनेस लाने में मदद कर रहे हैं। सरकारी एजेंसियों, ग्राम पंचायतों, सोशल ऑर्गनाइजेशन और कॉर्पोरेट सेक्टर के कोऑर्डिनेशन से मांओं और बच्चों के न्यूट्रिशन के लिए चलाई जा रही एक्टिविटीज़ ज़्यादा असरदार हो रही हैं। ऐसे कोऑपरेशन से गांव के इलाकों में ज़रूरतमंद बेनिफिशियरी तक ज़रूरी न्यूट्रिशनल मदद और गाइडेंस पहुंचाने में मदद मिल रही है। इस इवेंट को गांव वालों और महिलाओं से अचानक रिस्पॉन्स मिला। इवेंट के सफल ऑर्गनाइजेशन के लिए बधाई। चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर, जिला परिषद ठाणे श्री. रणजीत यादव ने कीमती गाइडेंस दिया। इंटीग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेंट सर्विस स्कीम प्रोजेक्ट भिवंडी-1 के तहत अधिकारियों, कर्मचारियों और संबंधित संगठनों के प्रतिनिधियों ने सहयोग किया।

निसर्गसत्ता ने मुख्यमंत्री, पर्यावरण मंत्री और कमिश्नर से स्टेशन रोड, राम मारुति रोड, गोखले रोड पर देसी पेड़ लगाने के लिए खास कैंपेन चलाने की मांग की

ठाणे। पेड़ लगाने के कैंपेन और उस पर करोड़ों खर्च करने के बावजूद, ठाणे की मुख्य सड़कों पर हरियाली का सूखा है। निसर्गसत्ता पर्यावरण संगठन ने मुख्यमंत्री, पर्यावरण मंत्री और ठाणे म्युनिसिपल कमिश्नर को एक रिप्रेजेंटेशन में रिक्वेस्ट की है कि स्टेशन रोड, राम मारुति रोड और गोखले रोड पर नए देसी पेड़ लगाकर उनके बचाव के लिए खास कैंपेन चलाया जाए।पर्यावरणविद डॉ प्रशांत सिनकर ने कहा कि विकास के कामों के नाम पर ठाणे शहर में सीमेंट-कंक्रीट से सड़कें बनाने का काम तेज़ी से चल रहा है। लेकिन, विकास के इस सफ़र में सड़कों के दोनों तरफ हरियाली और पेड़ पीछे रह गए हैं। ऑर्गनाइज़ेशन के राजीव डाके ने कहा कि स्टेशन रोड (बाज़ारपेठ), राम मारुति रोड और गोखले रोड शहर के ज़रूरी ट्रैफिक रूट हैं, और इन सड़कों पर काफ़ी पेड़ न होने की वजह से लोगों को छाँव और साफ़ हवा की कमी महसूस हो रही है।इस बैकग्राउंड में, शहर



की मुख्य सड़कों का सर्वे किया जाना चाहिए और जहाँ पेड़ों की कमी है, वहाँ लोकल मौसम और ज्योग्राफ़िकल हालात के हिसाब से 15 से 20 फ़ीट ऊँचे देसी पेड़ लगाए जाने चाहिए। जहाँ भी हो सके, सड़कों पर हरियाली और कुदरती छाँव बनाने के लिए जल्द से जल्द बड़े साइज़ के पौधे लगाए जाने चाहिए, ऐसा बयान में माँग की गई है।ज़िम्मेदारी सिर्फ़ पेड़ लगाने से खत्म नहीं होती, बल्कि हर पौधे को रेगुलर पानी देना, उसकी देखभाल करना और उसकी सुरक्षा करना भी ज़रूरी है। इसके लिए ट्री अथॉरिटी के ज़रिए एक अलग सिस्टम बनाया जाना चाहिए। लगाए गए पेड़ों की जियो-टैगिंग और उनकी संख्या और सर्वाइवल रेट पब्लिक की जानी चाहिए। ऑर्गनाइज़ेशन ने यह भी माँग की है कि लापरवाह अफ़सरों और कर्मचारियों की ज़िम्मेदारी तय करके एक टाइम-बाउंड एक्शन प्लान लागू किया जाए।ठाणे की मुख्य सड़कों पर तमहन, कंचन, बकुल, बहावा, करंज और आंवला जैसे देसी पेड़ लगाए जाने चाहिए जो स्थानीय पर्यावरण के लिए अच्छे हों। सिर्फ़ पेड़ लगाने के आंकड़े ही नहीं, बल्कि प्रशासन को लगाए गए पेड़ों के बचने की ज़िम्मेदारी भी लेनी चाहिए। ठाणे का विकास हरा-भरा होना चाहिए।

महाराष्ट्र के 18 हजार गांवों में शुरू होगा जलयुक्त शिवार 3 .0 अभियान

मुंबई। महाराष्ट्र में लगातार बढ़ती जल जरूरतों, गिरते भूजल स्तर और भविष्य में संभावित जलसंकट से निपटने के लिए राज्य सरकार ने जल संरक्षण की दिशा में व्यापक अभियान शुरू करने की तैयारी की है। केंद्र सरकार के 'जलसंचय : जनभागीदारी अभियान' के अंतर्गत राज्य के 18 हजार गांवों में 'जलयुक्त शिवार 3.0' योजना लागू की जाएगी। इस अभियान के तहत मई 2027 तक पूरे महाराष्ट्र में 34 लाख 83 हजार 940 कृत्रिम भूजल पुनर्भरण संरचनाएं तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इसकी जानकारी देते हुए संबंधित विभागों को निर्धारित समय सीमा में कार्य पूरा करने के निर्देश दिए हैं। सरकार का उद्देश्य केवल वर्षा जल को एकत्र करना ही नहीं, बल्कि उसे वैज्ञानिक तरीके से जमीन के भीतर पहुंचाकर भूजल स्तर में सुधार करना भी है। इसके लिए गांवों में छोटे-बड़े जल संरक्षण कार्यों को प्राथमिकता दी जाएगी। पुराने तालाबों का पुनर्जीवन, खेत तालाबों का निर्माण, रिचार्ज गड्ढे तैयार करना और वर्षा जल संचयन की व्यवस्था विकसित करना इस अभियान के प्रमुख हिस्से होंगे। सरकार का मानना है कि यदि गांव स्तर पर जल संरक्षण के कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से पूरा किया जाए और स्थानीय नागरिकों को भी इसमें शामिल किया जाए, तो भविष्य में पेयजल तथा सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है। इस अभियान को लेकर गुरुवार को मंत्रालय में केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सी.आर. पाटील की अध्यक्षता में आभासी बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस सहित संबंधित विभागों के अधिकारियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान केंद्र सरकार के 'जलसंचय : जनभागीदारी अभियान' और महाराष्ट्र में प्रस्तावित जल संरक्षण कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक में राज्य के 18 हजार गांवों में जलयुक्त शिवार 3.0 लागू करने तथा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार कृत्रिम भूजल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण करने पर चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने विभागों को स्पष्ट निर्देश दिए कि अभियान के सभी कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के लिए अभी से आवश्यक नियोजन किया जाए।